चन्दामामा
दिसम्बर १९९२
4
RS

गति सीमा
गति बढ़ाओ, २ लैक्टो किंग प्रति मिनट खाओ.
एक दिशा मार्ग
एक ही दिशा स्वाद भरी, दिशा लैक्टो किंग की।
हरी बत्ती
साफ रस्ता, चलते जाओ, लैक्टो किंग खाते जाओ।
आगे मिठाई की दुकान
लैक्टो किंग से जेब भरना ना भूलना.
बम्प से टकराओ
उछलो और ३ लैक्टो किंग मुंह मे टपकाओ।
कोई शोर नहीं
न चबाओ, सिर्फ चूसो मौज उड़ाओ.
चले चलो पैरीज़ लैक्टो किंग की डगर पर
इतना स्वाद कि एक से मन ना भरे
Lacto King
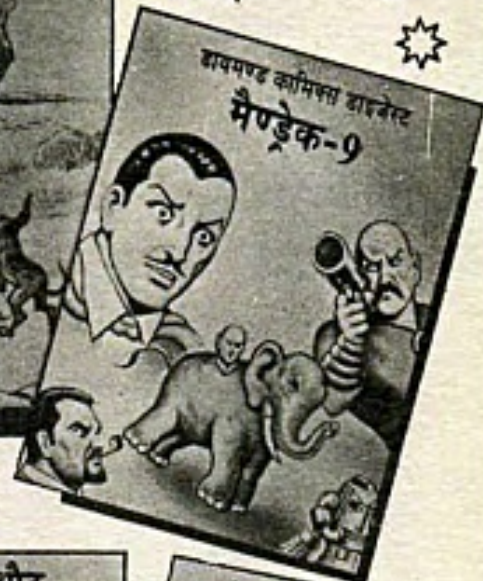
चन्दामामा

दिसम्बर १९९२

★

अगले पृष्ठों पर

★

एक प्रति : ४ रुपये

वार्षिक चन्दा : ४८ रुपये

मैगी जिगसा पज़ल से मैगी के
साहसिक कारनामों की दुनिया
को जानो.

मैगी स्काई क्लैब्बर में बादलों
से आगे बढ़ो.

समुद्र से आकाश का अभियान
पूरी करो मैगी एस एडवेंचरर्स
गेम में

चोर को पकड़ो-मैगी
हू-डन-इट रहस्यमय खेल में.

अब मौज-मस्ती भरे साहसिक खेल!

मैगी क्लब के सदस्यों के लिए मुफ़्त उपहार

मैगी रेडर्स ऑफ़ दि रेड स्टार
गेम में ग्रहों पर विजय पाओ.

मुफ़्त मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमल्स' क्विज़ पुस्तिका!
अपने हर 2 उपहारों के साथ तुम मुफ़्त ले सकते हो मैगी
'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमल्स' क्विज़ पुस्तिका.

आओ बच्चो! मैगी क्लब में शामिल होकर मैगी के मौज-मस्ती भरी चमत्कारी दुनिया में रंग जमाओ!

बस यह लोगो [MAGGI] मैगी नूडल्स के 5 रैपर के सामने वाले हिस्सों से काटकर हमें भेज दो. 6 से 8 हफ़्तों के बीच तुम्हें मैगी क्लब की ओर से तुम्हारी पसंद का मस्ती-भरा उपहार मिल जाएगा.

अपनी पसंद का उपहार मंगाते समय अपना नाम, पता और जन्म-तिथि ज़रूर लिख भेजना. और हां, अगर तुम पहले से ही मैगी क्लब के सदस्य हो तो अपनी सदस्यता संख्या अवश्य लिख भेजना. यदि तुम अभी तक सदस्य नहीं बने हो तो यह मौका मत चूकना! अपना विवरण भेजते समय सदस्यता कार्ड भी मंगवा लेना. तुम्हारे उपहार के साथ हम तुम्हारा मैगी क्लब सदस्यता कार्ड भी मुफ़्त भेज देंगे.

हमारा पता है
मैगी क्लब
पी.ओ. बॉक्स 5788, नई दिल्ली-110 055

एक और मौका: अगर अभी तक तुमने मैगी 'बर्डहाउस' नहीं लिया है तो तुरन्त ले लो!

HTA 7778HIN

वैमीकोल चमत्कारी गम
ख़ूब चिपकाओ उसके संग
गुड़िया का एक सुन्दर सा घर बनाओ, फर्नीचर और दूसरी चीजों से सजाओ। मोटे-ताजे जानवर, मजेदार मुखौटे, और खिलौने। लकड़ी, कागज, कार्ड-बोर्ड, फैब्रिक... कुछ भी इस्तेमाल करो! मौज मस्ती की कोई सीमा नहीं। सोचते जाओ, बनाते जाओ, अपना खाली समय बेहतर ढंग से बिताओ।
VAMICOL®
आर्ट एण्ड क्राफ्ट एडहेसिव
वैम ऑरगेनिक
केमिकल्स लिमिटेड
स्काईलाइन हाउस, 85, नेहरु प्लेस, नई दिल्ली-110019
VAMICOL
ART AND CRAFT ADHE
VAMICOL

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

खुशी बांटने का समय

क्रिसमस आता है और समूचे संसार में लोग अपने मित्रों और रिश्तेदारों को कार्ड भेजने में व्यस्त हो जाते हैं । ये कार्ड ऋतु-पर्व की शुभकामनाओं के संवाहक होते हैं । आम तौर पर शुभ कामनाओं का संदेश इन शब्दों में होता है : "क्रिसमस मुबारक" तथा "नया साल खुशी और खुशहाली लाने वाला हो ।" कुछ लोग इन शब्दों के साथ "शांति" शब्द भी जोड़ देते हैं ।

ऐसे मौके पर लोगों के मन में खुशी और शांति या अमन-चैन का खयाल कहां से पैदा होता है? दरअसल, यह आदमी के स्वभाव में ही है कि वह अपनी खुशी दूसरों के साथ बांटे । हो सकता है पहले उसके चेहरे पर मुस्कराहट आती हो । जब उसकी खुशी उसके भीतर समा नहीं पाती तो वह कई बार खुशी की किलकारी भी भरता है । इससे लोगों का ध्यान उसकी ओर खिंचता है । मुस्कराहट भी अपनी असर छोड़े बिना नहीं रहती, बशर्ते कि यह दूसरे को दिखाई दे जाये । लेकिन खुशी की किलकारी से तो दूसरा भी उसी तरह किलकारी भर उठता है । फिर या तो हाथ मिलाये जाते हैं या लोग एक दूसरे के गले लगते हैं । और जब खुशी का इज़हार शब्दों में होता है, तब ये शब्द अपनी खुशी दूसरों के साथ बांटने की इच्छा का प्रतीक बन जाते हैं । जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को खुश देता है तो उसे भी खुशी होती है । हां, अगर उस पर ईर्ष्या हावी हो तब बात दूसरी है ।

खुशी हासिल करने का एक तरीका यह भी है कि हम दूसरों पर किसी तरह का अत्याचार न करें । अत्याचार की भावना विचारों में भी नहीं आनी चाहिए । बल्कि किसी की विपत्ति में उसके प्रति सहानुभूति होनी चाहिए । साथ ही जो लोग अच्छे हैं, उनके प्रति सम्मान होना चाहिए, और अच्छे कामों की प्रशंसा होनी चाहिए ।

शांति दूसरों के साथ खुशी बांटने से ही प्राप्त होती है । जब लोगों में आपस में समानता होगी तो शांति का प्रसार होगा ।

वर्ष : ४५ | दिसम्बर १९९२ | अंक : ४
एक प्रति : रु. ४/- | वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

यूरोपीय संघ की ओर
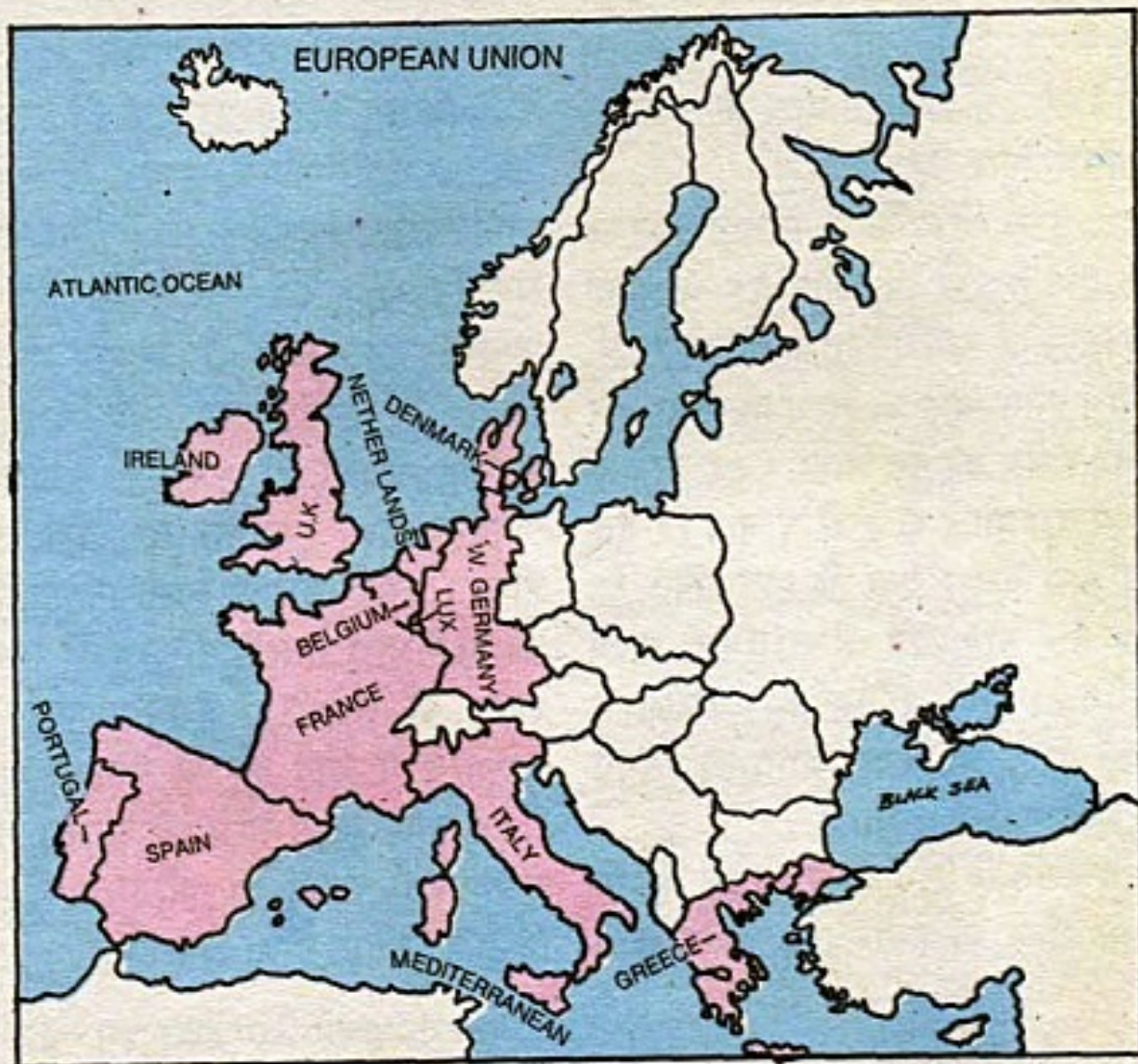
१९५७ की बात है। तब पहले-पहल यूरोपीय आर्थिक समुदाय की स्थापना हुई थी। इसका दूसरा नाम साझा बाज़ार भी था, और इसका दौर इन ३५ वर्षों तक चलता रहा। लेकिन इस वर्ष के शुरू में इस नाम को बदलकर और सरल कर दिया गया। अब इसे यूरोपीय समुदाय ही कहा जाता है। इसके १२ सदस्य हैं जिनकी बराबर यही कोशिश चल रही है कि इसे यूरोपीय संघ बना दिया जाये। इसमें इसका महत्व अधिक दिखता है।

शुरू-शुरू में इस आर्थिक संगठन के ६ सदस्य थे, जिनके नाम थे बेल्जियम, फ्रांस, इटली, लक्ज़मबर्ग, नीदरलैंड और पश्चिमी जर्मनी। १९७३ में इसमें ६ और राष्ट्र शामिल हो गये। ये थे डेनमार्क, आयरलैंड, यूनान, स्पेन, पुर्तगाल तथा, इंगलैंड।

दिसबर, १९९१ में इन १२ राष्ट्रों के

विदेश मंत्रियों की नीदरलैंड के मास्ट्रिच में बैठक हुई और ये राष्ट्र यूरोपीय संघ संधि के लिए सहमत हो गये । दो महीने बाद इस संधि पर सभी संबंधित राष्ट्रों के नेताओं ने विचार किया और उस पर अपने हस्ताक्षर कर दिये । साथ ही यह भी फैसला हुआ कि ये १२ राष्ट्र इस संधि की स्वतंत्रता रूप से भी पुष्टि करेंगे ।

इस तरह की संधि के विचार आने के पीछे एक कारण था, और वह था दोनों महाशक्तियों, अमरीका तथा सोवियत संघ, के बीच शीत-युद्ध का खत्म हो जाना और सोवियत संघ का टूट जाना । टूट जाने के बारे में तुम पहले के अंकों में जान ही चुके हो । अब केवल एक ही महाशक्ति रह गयी है, और वह है संयुक्त राज्य अमरीका । ऐसी शक्ति के मुकाबले में संयुक्त यूरोप का विचार आना न्यायसंगत और व्यावहारिक लगता है ।

संघ बनने के लिए ज़रूरी है कि आपसी सीमांत खत्म हों ताकि एक की समुदाय के भीतर लोग आसानी से आ-जा सकें, और उसी प्रकार समान सेवाओं तथा पूंजी का भी संचालन हो । संधि में, जनवरी, १९९३ से इस समझौते को कार्यरूप मिलने का उल्लेख है । एक साल के बाद यूरोपीय मुद्रा संस्थान भी अस्तित्व में आ जायेगा । इस संस्थान के अस्तित्व में आ जाने से १९९७ में यूरोपीय सेंट्रल बैंक की स्थापना होगी और इस शतब्दी के अंत तक साझा यूरोपीय मुद्रा का प्रचलन भी शुरू हो जायेगा । इस संधि के अनुसार संघ का शिक्षा, संस्कृति, सार्वजनिक स्वास्थ्य, उद्योग, उपभोक्ता संरक्षण, पर्यावरण, परिवहन तथा दूरसंचार में ज़्यादा दखल होगा । इसके अलावा साझी विदेश निति का भी निर्माण होगा जिससे संघ की पहचान स्पष्ट हो सकेगी । यूरोपीय संसद के अस्तित्व में आने की भी बात है । इन १९० पृष्ठों वाली संधि को संयुक्त राज्य यूरोप जैसी इकाई को अस्तात्व में लाने वाली कहा गया है जो ठीक ही है ।

आस्ट्रेलिया को छोड़ दें तो यूरप बहुत छोटा सा महाद्वीप होता है । भौगोलिक रूप से एशिया महाद्वीप खंड से यह जुड़ा हुआ है, और इन दोनों महाद्वीपों के बीच का विशेष स्पष्टीकरण पहले पहल असीरियनों द्वारा किया गया जिन्होंने एशिया को 'उदीयमान सूर्य' कहा था और यूरप को 'अस्तमय सूर्य' कहा था ।

पुष्टिकरण के लिए जब इस संधि को विभिन्न राष्ट्रों को भेजा गया तो डेनमार्क ने इसे अस्वीकृत कर दिया, लेकिन यूनान की संसद ने इसे बहुमत से स्वीकृत किया । हाल ही में फ्रांस में इसके पक्ष में ५१ और विपक्ष में ४९ मतदान हुआ । लक्ज़मबर्ग और नीदरलैंड ने भी इस संधि का समर्थन किया है । इस वर्ष के अंत से पहले बाकी ७ राष्ट्रों के निर्णय की भी प्रतीक्षा की जा रही है ।

ज्ञानोदय

शिव अभी पांच वर्ष का ही था कि उसके माता-पिता की मृत्यु हो गयी। अनाथ शिव को रामदास नाम के एक व्यक्ति ने उस पर तरस खाकर अपने घर में रख लिया और उसका पालन-पोषण करने लगा। लेकिन शिव स्वभाव से आलसी था। पढ़ाई-लिखाई में तो उसका मन लगता ही नहीं था और कोई काम-काज भी वह सीखना नहीं चाहता था। होते-होते वह अब सोलह वर्ष का हो गया था, लेकिन था बिलकुल मूढ़।

एक दिन रामदास ने उससे कहा, "देखो बेटा, यह आलसीपन छोड़ो। आलसी बने रहोगे तो हर कोई मुझ पर ही उंगली उठायेगा और कहेगा की मैंने जानबूझकर तुम्हें किसी काम का न रखा। मैं अब बूढ़ा हो चुका हूं। अब भी अगर तुम काम नहीं करोगे तो तुम्हारा जीना दूभर हो जायेगा। हो सकता है इस घर के दूसरे बच्चे तुम्हें खाने तक को न दें। चलो, आज से तुम सुबह-शाम पौधों को पानी दिया करो। पानी दोगे, तभी तुम्हें खाना मिलेगा।"

रामदास के घर का पिछवाड़ा काफी बड़ा था और वहां तरह-तरह के पौधे थे। उनमें कुछ पौधे फलों के थे, कुछ सब्जियों के और कुछ फूलों के। उन्हें अच्छी तरह पानी देने के लिए सुबह और शाम दो-दो घंटे की मेहनत की आवश्यकता थी।

यह काम शिव को काफी तकलीफदेह और कठिन लगा।

लेकिन उधर रामदास का हुक्म था कि शिव को खाना तभी दिया जाये जब वह पौधों को पानी दे। शिव के लिए यह एक उलझन वाली स्थिति हो गयी। वह सोचने लगा कि ऐसा कौन-सा तरीका हो सकता है जिससे बिना कष्ट उठाये वह अपना
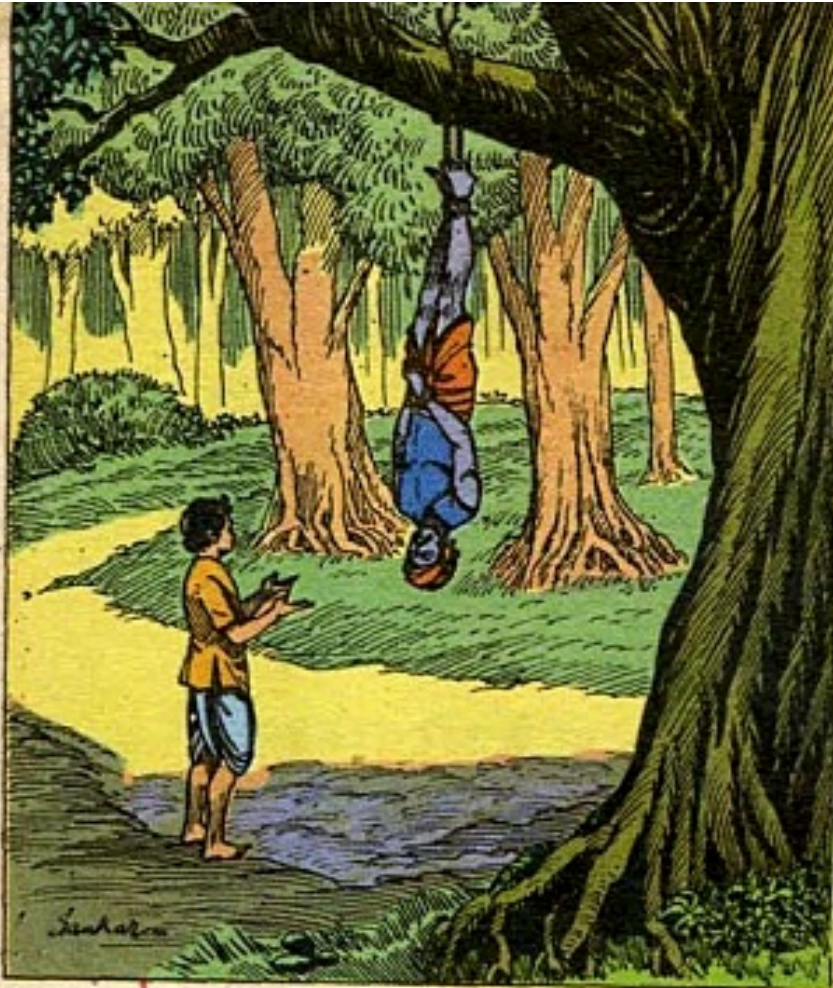
काम पूरा कर सके । इस युक्ति की खोज में वह गांव के बाहर की ओर चल पड़ा । गांव के बाहर एक गुफा थी जिसमें एक बैरागी रहता था । वह उसी के यहां जा पहुंचा ।

शिव की बात बैरागी ने ध्यान से सुनी और बोला, "अगर तुम चाहो कि धरती की सिंचाई बिना मेहनत किये हो जाये तो इसके लिए बारिश चाहिए, और जब तुम चाहो कि बारिश हो जाये तो इसके लिए योगसाधना की ज़रूरत पड़ेगी । यहां से पूरब और उत्तर के बीच की दिशा में एक जंगल है । वहां किसी बरगद के नीचे औंधे मुंह लटककर तुम छः महीने तक तपस्या करो । तब तुम्हें कुछ सिद्धियां प्राप्त होंगी जिनके बल तुम्हारी मनोवांछित इच्छाएं पूरी हो जायेंगी ।"

शिव तुरंत उसी दिशा में चल पड़ा । जल्दी ही वह जंगल में पहुंच गया । वहां उसे एक व्यक्ति एक पेड़ से उलटा लटकता दिखाई दिया । शिव उसके पास गया और उससे विनीत स्वर में बोला, "मैं भी आपकी तरह पेड़ से लटकना चाहता हूं । तब हम साथ ही सिद्धियां प्राप्त कर लेंगे ।"

शिव की बात सुन-कर वह व्यक्ति खीझ उठा और कहने लगा, "सिद्धियां क्या होती हैं? मुझे तो यहां कुछ भीलों ने इस तरह से लटका दिया था । पहले पेड़ पर चढ़कर मुझे मुक्त करो, और बाकी की बातों हम बाद में करेंगे ।"

शिव ने पेड़ पर चढ़कर उसके बंधन खोल दिये और उसे मुक्त किया । साथ ही उसे यह भी पता चला कि वह व्यक्ति एक चोर है । फिर उसने उस चोर को बैरागी की बात बतायी और बोला, "जान पर खेल कर चोरी करने के बजाय आप क्यों नहीं इसी तरह छः महीने लटककर सिद्धियां प्राप्त कर लेते?"

शिव की बात सुनकर चोर को पहले तो हंसी आ गयी, फिर वह एकाएक गंभीर होकर बोला, "क्या कहते हो । यहां तो एक घंटे तक लटकते रहना भी मुझसे बरदाश्त नहीं हो पा रहा था, और तुम छः महीने लटकने की बात कहते हो । अगर तुम चाहते हो तो मैं तुम्हें यहां लटकाये देता हूं, वरना तुम मेरे साथ चलो । मैं तुम्हें जल्दी ही सिखा

दूंगा कि चोरी कैसे की जाती है। तुम्हारी इस तरह की तपस्या से तो मेरा चोरी करना कहीं बेहतर है। दूसरे, जब हम दोनों साथ-साथ रहेंगे तो हमें एक दूसरे के बंधन खोलने में भी आसानी रहेगी।"

चोर की बात शिव को पसंद आ गयी। वह चोर के साथ चल दिया। उस रात चोर ने शिव को अच्छी तरह नहलाया और उसके शरीर पर तेल लगाकर उस पर काला रंग पोत दिया। उसने अपने शरीर पर भी उसी तरह काला रंग पोत लिया, और फिर वे दोनों चोरी करने निकल पड़े।

रास्ते में जो गांव पड़ा, शिव ने वहां एक बड़ी इमारत दिखाते हुए चोर से कहा, "इसी मकान में अपनी किस्मत आज़माते हैं। उम्मीद है, यहां काफी माल हाथ लगेगा।"

लेकिन चोर ने मना करते हुए अपना सर हिलाया और कहा, "ऐसे घरों में पहरेदार और शिकारी कुत्ते रहते हैं। इसलिए हमें छोटे मकानों में ही चोरी करनी चाहिए, चाहे वहां पैसा कम ही मिले।"

आखिर एक अच्छा-सा, छोटा मकान देखकर वे उसमें घुस गये और वहां उन्होंने अपनी किस्मत आज़मायी। वहां उनके हाथ दो सौ अशर्फियां लगीं। शिव खुश हो गया और बोला, "यह रकम हम आपस में बराबर-बराबर बांट लेते हैं। इससे हमारा एक महीने का खर्चा आराम से निकल जायेगा, और हमें कहीं और चोरी करने की ज़रूरत भी नहीं पड़ेगी।"

लेकिन चोर उससे सहमत नहीं हुआ। उसने कहा, "जिस व्यक्ति ने हमें इस घर का सुराग़ दिया था, वह भी तो इसमें हिस्सेदार है। उसे इस रकम में से पचास अशर्फियां देनी होंगी। फिर हमारा एक सरदार भी है जिसकी इजाज़त के बिना हम चोरी नहीं कर सकते। पचास अशर्फियां हमें उसे भी देनी होंगी। यहां मुहल्ले का पहरेदार भी था। उसने हमें देखकर अनदेखी कर दी। उसे पचास अशर्फियां देनी चाहिए। अब बताओ हमारे पास क्या बचा? पचास अशर्फियां। उन्हें हम आपस में आधा-आधा बांट लेते हैं। पर इनमें से हमें काली माई के मंदिर में दस-दस भेंट चढ़नी होगी।
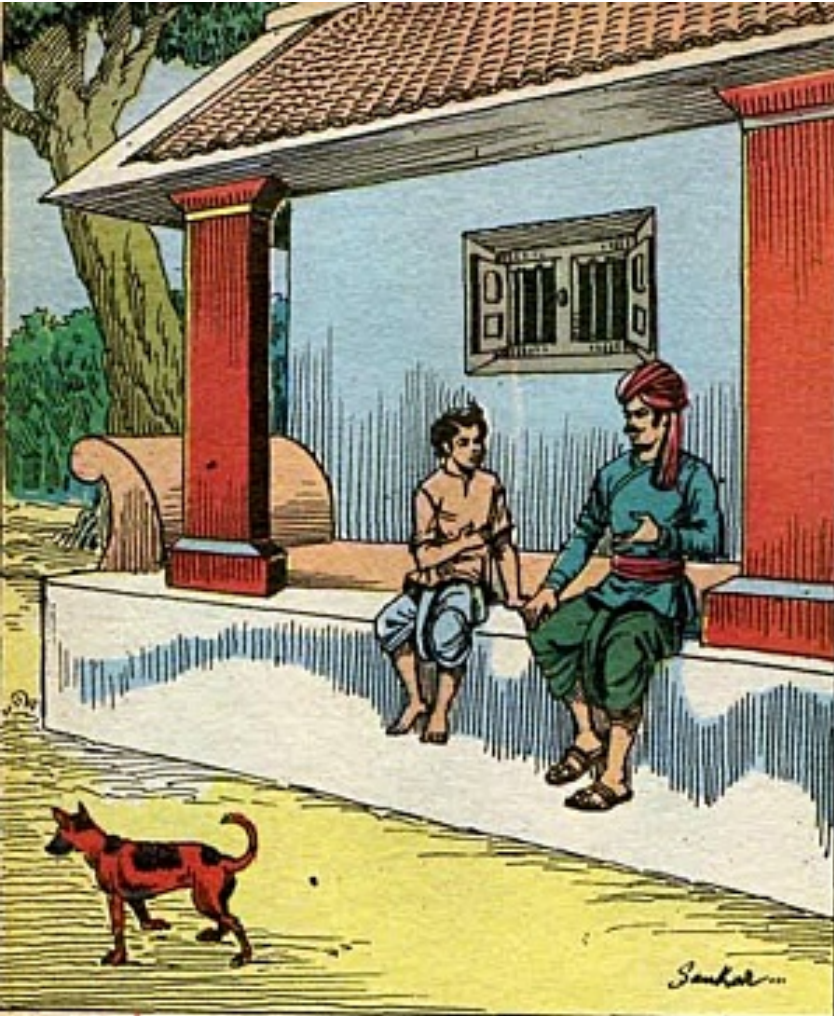
अब तुम खुद ही देख लो हमारे पास क्या बचा । एक-एक को पन्द्रह अशर्फियां ।"

शिव इस पर भी संतुष्ट था । लेकिन जब वे अपने ठिकाने पर पहुंचे तो शिव को अपने शरीर पर से तेल और काला रंग हटाने के लिए कम से कम दो घंटे की मेहनत करनी पड़ी । उससे वह दुःखी हो गया । उसे लगा कि उससे तो वह पहरेदार ही अच्छा है जिसने मुफ्त में थोड़ी सी अनदेखी करके पचास अशर्फियां बना लीं । इसलिए वह दूसरे दिन उस पहरेदार के पास पहुंचा और उससे बोला कि वह उसे भी कहीं अपने तरह की नौकरी दिलवा दे ।

शिव की बात सुनकर पहरेदार को अचंभा हुआ । उसने कहा, "पहरेदारी करने के लिए तुम्हें मेरी तरह कोतवाल के घर पर मुफ्त में चाकरी करनी पड़ेगी । तभी वह तुम्हें चोरी होने के बावजूद बराबर बख्शता रहेगा । लेकिन यह कमाई है बढ़िया । मोटी रकम बन जाती है । अगर तुम इसके लिए रज़ामंद हो तो मुझे बता दो, मैं कोतवाल से बात कर लूंगा । और तो और, मैं भी तुम्हें हर महीने एक बंधी-बंधायी रकम देता रहूंगा । क्यों क्या ख्याल है तुम्हारा?"

"यह चाकरी-वाकरी मेरे बस की नहीं । अच्छा तो यही हो कि मैं कोतवाल ही बन जाऊं । मुझे यह बताओ कि इसके लिए मुझे क्या करना होगा ।" शिव ने उससे पूछा ।

"तुम कोतवाल बनना चाहते हो? इसी गांव में चंद्रप्रकाश नाम का एक शिक्षक है । तुम उससे मिलो ।" पहरेदार ने सलाह दी ।

शिव अविलंब चंद्रप्रकाश के यहां पहुंचा । चंद्रप्रकाश के दो सौ शिष्य थे । उसने शिव की बात सुनी और कहने लगा, "जानते हो कोतवाल को क्या करना होता है? उसका काम है चोरों को पकड़ना, और चोरों को पकड़ने के लिए ताकत, चालाकी और स्फूर्ति चाहिए । इसके लिए पहले तुम्हें दो साल तक मेरे यहां पूरी लगन से शिक्षा प्राप्त करनी होगी । तभी तुम कोतवाल या उसी तरह का कोई दूसरा पद पा सकोगे ।"

चंद्रप्रकाश की बात सुनकर शिव घबरा गया । कहने लगा, "इतनी मेहनत । यह मुझसे नहीं हो सकेगा । मैं आपका शिष्य नहीं बन सकता, लेकिन मुझे यह बताइए

कि यदि मैं आपकी तरह शिक्षक बनना चाहूं तो मुझे क्या करना होगा?"

"शिक्षक बनने के लिए तुम्हें कई वर्षों तक विद्याध्ययन करना होगा और साथ-साथ प्रशिक्षण भी प्राप्त करना होगा। इसके लिए बड़ी श्रद्धा और मेहनत की ज़रूरत है।" चंद्रप्रकाश ने सरलता से कहा।

शिव थोड़ी देर तक कुछ सोचता रहा और फिर चंद्रप्रकाश को नमस्कार करके उससे बोला, "श्रीमान, आप एक काफी पढ़े-लिखे व्यक्ति हैं। आपने काफी दुनिया भी देखी है। आप मुझे बताइए कि वह कौन-सा तरीका है जिससे बिना मेहनत किये पैसा कमाया जा सकता है?"

चंद्रप्रकाश को शिव पर दया आ गयी। वह उसे समझाते हुए बोला, "तुम्हारा सोचना न्यायसंगत नहीं। फिर भी एक रास्ता है। इस गांव में सोमनाथ नाम का एक धनवान है। उसके यहां जाओ और उसे सुबह और शाम दो-दो घंटे के लिए कहानियां सुनाया करो। इससे वह तुम्हें हर रोज़ पांच अशर्फियां दे दिया करेगा।"

चंद्रप्रकाश के यहां से शिव सीधा सोमनाथ के यहां गया। सोमनाथ एक भारी-भरकम शरीर वाला व्यक्ति था। बडे से पलंग पर वह सुस्त पड़ा हुआ था। शिव की कहानियां उसे पसंद आयीं। शिव वहीं रूक गया।

एक दिन शिव ने सोमनाथ से कहा, "मुझे आपके संग रहना बहुत अच्छा लगता है। मैं यहीं रहकर अपना सारा जीवन बिता देना

चाहता हूं।"

शिव की बात सुनकर सोमनाथ बड़े अनोखे ढंग से हंसा और कहने लगा, "मुझे तुम्हारी कहानियां पसंद तो हैं, लेकिन इसी तरह ज़्यादा दिन नहीं चल पायेगा।"

"आप ऐसा क्यों सोचते हैं? क्या आपको पैसे की तंगी आ जाने का डर है?" शिव ने पूछा।

इस प्रश्न पर सोमनाथ को फिर हंसी आ गयी और बोला, "तुम बहुत नादान हो। मेरे पास इतनी दौलत है कि वह मेरी पांच पीढ़ियों तक खत्म नहीं होगी। तंगी होने का तो सवाल ही नहीं उठता। लेकिन बचपन से क्योंकि मैं आलसी रहा, मैं मोटा हो गया हूं और मेरा शरीर भी मुझे भारी लगने लगा

है । इस भारीपन को खत्म करने के लिए ही मैं कम खाना शुरू किया । तुमसे मैं कहानियां इसलिए सुनता हूं कि मैं अपनी भूख को भूला रहूं । वैद्य से बराबर दवाई ले रहा हूं, लेकिन अभी कोई फरक नहीं पड़ा । जब यह भारीपन थोड़ा कम हो जायेगा तो वैद्य दूसरी चिकित्सा शुरू करेगा । तब मुझे तुम्हारी कहानियां सुनने की फुरसत नहीं मिलेगी ।"

"ऐसा क्यों?" शिव ने पूछा ।

सोमनाथ फिर हंसा, और बोला, "अभी मैं पलंग से उठकर घूम-फिर नहीं पाता । भारीपन कम हो जाने पर मैं थोड़ा घूमूं-फिरूंगा । शायद मुझे इस हवेली के पिछवाड़े में सुबह-शाम पौधों को पानी भी देना होगा । दो-दो घंटे के लिए पानी दूंगा । यही मेरा नया इलाज होगा । दो-एक हफ्ते की ही बात है । वैद्य का कहना है कि इस तरह पौधों को पानी देने से मेरा स्वास्थ्य ठीक हो जायेगा ।

सोमनाथ की बात सुनकर शिव आश्चर्य-चकित रह गया और अनायास ही बोल पड़ा "ओह,दोनों वक्त दो-दो घंटे पौधों को पानी देना । यह तो बड़ा कष्ट देने वाला काम है ।"

"मेहनत से बचने के कारण ही मेरी यह हालत हुई, और मुझे इस तरह पड़े रहना पड़ा । अपना स्वास्थ्य खोकर इस तरह मजबूर पड़े रहने से तो मेहनत करके स्वस्थ रहना कहीं बेहतर है । है या नहीं?" सोमनाथ ने शिव की ओर देखते हुए कहा ।

अब कहीं जाकर शिव को ज्ञान हुआ । वह सोमनाथ के यहां उतने दिन ही रहा जितने दिनों तक उसे उसकी ज़रूरत थी । फिर वह वापस अपने पालन-पोषण करने वाले पिता समान रामदास के यहां लौट गया । वह समझ गया था कि बिना मेहनत किये कुछ भी प्राप्त नहीं किया जा सकता ।

अब उसे जो भी काम दिया जाता, उसे वह खुशी-खुशी करता । उसका समय अब संतोष से बीत रहा था ।

जादुई महल

८

[महेंद्रनाथ लापता राजकुमारी विद्यावती की तलाश में निकला हुआ है। वह झील के एक ओर के जंगलों में से खतरों से भरपूर यात्रा पूरी करके एक पहाड़ की चोटी पर बने एक बहुत बड़े भवन तक पहुंचता है। भवन के फाटक पर पहले तो दरबान उसे रोकता है, लेकिन फिर उस पर दया करके उसे अपने कमरे में विश्राम करने के लिए थोड़ी जगह दे देता है। यहां रुककर महेंद्रनाथ को एक ऐसी महिला के बारे में पता चलता है जो इस भवन में आती रहती है। —उस से आगे]

दरबान महेंद्रनाथ के लिए जो खाना लाया था, महेंद्रनाथ उसे खा चुकने के बाद चुपचाप लेट गया। महेंद्रनाथ उस घटनाक्रम को याद करता रहा जो पिछली संध्या से संन्यासी से भेंट करने के बाद से घटता रहा था। उसे अब भी यह सोचकर हैरानी हो रही थी कि क्यों उस वयोवृद्ध संन्यासी ने विदाई के समय आंसू बहाये। फिर उसे उस अंगूठी की याद हो आयी जो संन्यासी ने उसे दी थी।

महेंद्रनाथ को यह पता नहीं चला कि वह कब सो गया और कब दरबान कमरे में वापस आया। हां, उसने एक बार मुख्य द्वार पर जंजीर के बजने की आवाज़ ज़रूर सुनी थी। जब वह जगा तो उसे चारों ओर चहलकदमी सुनाई दी। फिर थोड़ी देर बाद ही दरबान कमरे में दाखिल हुआ। उसके हाथ में दो तश्तरियां थीं। जिस समय वे

उन तश्तरियों मे से खा रहे थे, महेंद्रनाथ ने दरबान से पूछा, "तो इसका मतलब यह है कि तुम्हारे मालिक आ गये हैं । है न?"

दरबान ने उसकी ओर देखा और प्रश्न किया, "तुम्हें इसका कैसे पता चला?"

"मेरा ख्याल है मैंने मुख्य द्वार पर संकल के बजने की आवाज़ सुनी थी ।" महेंद्रनाथ ने स्पष्टीकरण सा देते हुए कहा । "दूसरे, मैं हर किसी को व्यस्त पा रहा हूं । अब मुझे यहां और रुकना नहीं चाहिए ।"

"तुम ठीक कहते हो । मालिक आ गये हैं," दरबान ने कहा । "लेकिन वह महल के इस भाग में बहुत कम ही आते हैं । इसलिए तुम्हें भागने की जल्दी नहीं होनी चाहिए । मैं मालिक से जान लूंगा कि क्या वह तुम्हें किसी प्रकार का काम दे सकते हैं?"

"मैं तुम्हारा आभारी हूं, मेरे प्यारे दोस्त," महेंद्रनाथ ने प्रत्युत्तर में कहा ।

जब दरबान तश्तरियां लेकर चला गया तो महेंद्रनाथ कुछ समय तक खिड़की में से बाहर की गतिविधियां देखता रहा । एकाएक उसके मन में एक विचार कौंधा-क्यों न वह भी दूसरे नौकरों के बीच घुलमिल जाये । वह होशियारी से अन्य लोगों के बीच जा मिला ।

कुछ कर्मचारी उद्यान में प्रतिमाओं को झाड़-पोंछ रहे थे, और कुछ वहां पौधों को रोपने के साथ-साथ उनकी कटाई-छंटाई कर रहे थे । महेंद्रनाथ उन मालियों के साथ काम में लगा रहा । मालियों ने यही समझ लिया था कि वह भी उन्हीं में से एक है ।

फिर वह चुपके से बरामदे में पहुंच गया और अपनी कमर पर बंधी चादर खोलकर दरवाजे-खिड़कियां रगड़ने लगा ।यह काम ऐसा था जिससे वह विभिन्न कक्षों के अंदर भी झांक सका । कुछ कमरे तो बिलकुल खाली पड़े थे, और कुछ कमरे बंद थे ।

महेंद्रनाथ बरामदों में उसी तरह लगा रहा । किसी ने भी उसकी ओर ध्यान नहीं दिया । वह भीतर भी ऐसे ही घूम आया ।

एक गलियारा उसे एक बहुत बड़े कमरे में ले गया । यह कमरा भी दूसरे कमरों की तरह आइनों से लदा हुआ था । वहां मखमली कालीनों से ढके चबूतरों पर तीन वयोवृद्ध पंडित बैठे हुए थे । उनमें से दो पुराने ग्रंथों का

वाचन कर रहे थे । आधा दरवाज़ा खुला था । महेंद्रनाथ ने उसमें दाखिल हो गया ।

"तुम कौन हो?" दरवाज़ो की ओर मुंह करके बैठे पंडित ने खिन्नता से पूछा ।

महेंद्रनाथ ने अपने को छद्म में ही रखा । उसने बस इतना ही कहा, "मैं यह जगह साफ करने आया था, यदि मैंने आपके काम में, किसी प्रकार की बाधा डाली है तो कृपया मुझे क्षमा करें । मेरी यह मंशा बिलकुल नहीं थी । मैं बाद में आ जाऊंगा," उसने सहजता का ढोंग करते हुए कहा ।

"यह कमरा पहले ही ठीकठाक कर दिया गया है । इसमें और कुछ करने की ज़रूरत नहीं । तुम जा सकते हो ।" इस बार उस व्यक्ति के स्वर में खिन्नता नहीं थी ।

"जी, सरकार," महेंद्रनाथ ने क्षमा-याचना के स्वर में कहा । उसने झुककर उसका अभिवादन किया और सहजभाव से उलटे पांव लौट गया । लेकिन लौटने से पहले उसने खास खयाल किया कि वे तीनों व्यक्ति एक-जैसे और एक ही रंग के कपड़े पहने हुए थे । यह क्या तमाशा है? उसने सोचा ।

दोपहर होने को थी । महेंद्रनाथ ने तय किया कि वह अपने कमरे में लौट जायेगा । लेकिन उसे यह सोचकर थोड़ी परेशानी भी हो रही थी कि वह अपने मित्र को कमरे से बाहर रहने का क्या कारण बतायेगा । खैर, वह कमरे में बिना किसी का ध्यान आकर्षित किये वापस पहुंच गया ।

जल्दी ही दरबान वहां आ गया । वह अपने साथ खाना भी लेता आया था । "मैंने अपना खाना वहीं दूसरों के साथ बैठकर खा लिया
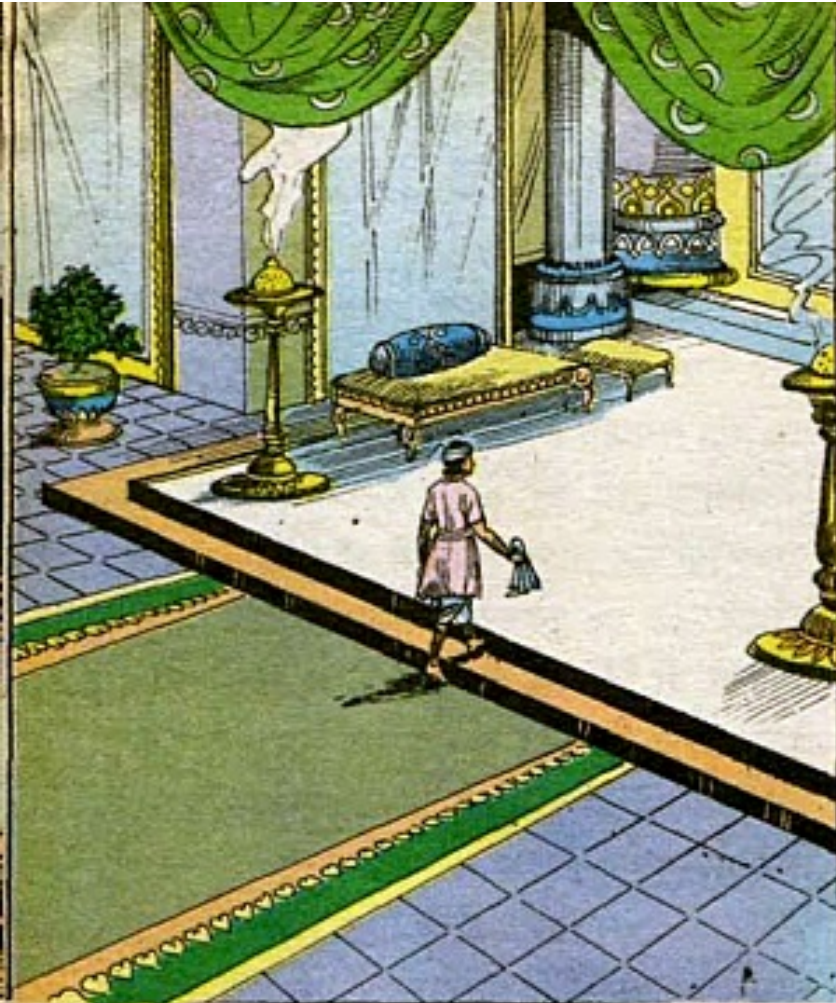
है । मुझे देर तो नहीं हो गयी?" उसने कहा । "क्या तुमने कुछ आराम किया?"

अब कहीं महेंद्रनाथ की जान में जान आयी । साफ ही था, कि उसके मित्र को किन्हीं दूसरे कामों में लगा दिया गया था और उसे अब तक कमरे मैं लौटने की फुरसत ही नहीं मिली थी ।

"हां, खूब जमकर आराम किया । यहां तो नौकर ही नौकर हैं । मैं उन्हें काफी देर तक काम करते देखता रहा," उसने दरबान को बताया ।

दरबान थककर चूर हो चुका था । सुस्ताने के लिए उसने अपनी टांगें फैला दीं ।

"अपने मालिक से....... तुम्हारी....."

इससे पहले कि महेंद्रनाथ अपना वाक्य पूरा करता, दरबान ने उत्तर दिया, "मालिक इस बार अकेले नहीं आये हैं । उनके साथ तीन और व्यक्ति भी हैं । वे ज्योतिषी दिखाई देते हैं । हमें जल्दी से उनके लिए कुछ कमरे तैयार करने पड़े । लगता है वे कुछ दिन यहां रुकेंगे । उन सब ने एक साथ खाना खाया । बाद में मैंने मालिक को अपने कमरे में जाते देखा । अगर वह बाहर बगीचे में आये तो मुझे उनसे बात करने का मौका मिल जायेगा ।"

महेंद्रनाथ ने देखा कि बात करते-करते उसका मित्र सो गया है । रात को उसे चौकीदारी करने के लिए फिर जागना होगा । इसलिए उसके लिए इस तरह कुछ देर सोना ज़रूरी था ।

दरबान जब सो गया तो महेंद्रनाथ फिर खिड़की के निकट हो गया । वह हर चीज़ पर अपनी निगाह रखे हुए था । सूरज डूबने में अभी कुछ देर थी ।

महेंद्रनाथ की आंखें उद्यान के एक कोने से दूसरे कोने तक घूम रही थीं । तभी उसकी नज़र एक व्यक्ति पर पड़ी । उसने अंदाज़ा लगाया कि इस भवन का मालिक यही होगा । हालांकि उसने सर के बाल बढ़ा रखे थे और वह तराशी हुई दाढ़ी भी रखे हुए था, लेकिन उस सबसे उसकी उम्र का अंदाज़ा लगा पाना असंभव था । हां, वह देखने में राजसी था । उसने एक लंबा रेशमी चोगा पहन रखा था और वह पूरी तरह ध्यानमग्न दीखता था । एक-दो बार उसने दरबान के कमरे की ओर

कहा । "मैं खिड़की के पास नहीं गया था । लेकिन मैंने यह ज़रूर देखा कि वह अपना चेहरा घुमाकर इधर देख रहे थे ।"

दरबान ने अपनी वर्दी पर हाथ फेरकर उसे ठीक-ठीक किया, फिर एक तौलिये से अपना चेहरा पोंछा और पगड़ी को सर पर रखा और लपक कर बाहर चला गया । जिन भारी कदमों से वह बाहर लपका, उससे उसके मालिक का ध्यान उसकी तरफ चला गया । वह फौरन उसकी ओर मुड़े और फिर महेंद्रनाथ ने देखा कि दोनों कुछ समय तक आपस में बातचीत करते रहे । मालिक इस तरह से इशारे कर रहे थे जैसे वह भवन के किन्हीं दूसरे भागों के बारे में बात कर रहे हों ।

दरबान बड़ी विनम्रता से झुका और वहां से हट गया । महेंद्रनाथ ने देखा कि वह उसी दिशा में जा रहा था जिधर मालिक ने इशारा किया था । मालिक स्वयं वापस बरामदे की ओर बढ़े और फिर कहीं भीतर चले गये ।

अंधेरा होने से पहले दरबान कमरे में लौट आया और मुस्कराते हुए महेंद्रनाथ की ओर बढ़ा "तुम्हारे लिए एक अच्छी खबर है । मालिक महल के दूसरे द्वार के दरबान को बदलना चाहते हैं । वहां महिलाएं ही रहती हैं । उन्होंने मुझसे कहा है कि मैं किसी ऐसे मज़बूत आदमी की तलाश करूं जो कई-कई घंटों तक जाग सकता हो । क्या ख्याल है तुम्हारा...?"

"वाह," महेंद्रनाथ ने उत्साह से भरकर

भी देखा, लेकिन उसने इसके पास आने की कोशिश नहीं की ।

महेंद्रनाथ ने सोचा कि उसे अपने मित्र को चौकस कर देना चाहिए । "जागो । जागो । मालिक बगीचे में हैं । मुझे लगता है वह तुम्हें ही खोज रहे हैं ।"

दरबान ज़मीन पर ही बिस्तर बिछाकर सो रहा था । वह एकाएक उछलकर खड़ा हो गया । उसने खिड़की में से झांककर देखा, "हां, तुम ठीक कहते हो । वही मालिक हैं । लेकिन यह तुमने कैसे जाना कि वह मुझे खोज रहे हैं? मुझे उम्मीद है उन्होंने तुम्हें देखा नहीं ।"

"नहीं, मैं समझता हूं उन्होंने मुझे नहीं देखा," महेंद्रनाथ ने उसे आश्वस्त करते हुए

कहा, "मैं ज़रूर इस काम पर एक बार अपने को आज़माना चाहूंगा । मैं फौरन काम शुरू कर देता हूं, क्योंकि मैंने दिन भर काफी आराम कर लिया है । क्या तुम मुझे वह जगह दिखा दोगे?"

"क्या बात है ।" दरबान ने कहा । "आओ, मैं तुम्हें वहां लिये चलता हूं । लोग उधर से कम ही आते हैं । वहां ज़्यादातर ताला ही पड़ा रहता है ।"

दरबान ने लालटेन जलायी और महेंद्रनाथ को एक घुमावदार रास्ते से अपने साथ ले चला । आखिर, वे किन्हीं सीढ़ियों के पास पहुंचे । वे सीढ़ियां नीचे की ओर जाती थीं । वहां एक ओर लोहे का फाटक था जिस पर भारी जंजीरें पड़ी हुई थीं । उस फाटक से इमारत का कुछ भी पता नहीं चलता था ।

महेंद्रनाथ वहीं जमकर खड़ा हो गया । उसका दरबान मित्र बोला, "यहां ज़्यादा काम नहीं है । इसलिए आराम से रहो । मैं तुम्हारा खाना यहीं ला दूंगा । और जब सुबह मैं यहां आऊंगा तो तुम वापस कमरे में जाकर आराम कर सकते हो । लालटेन यहीं अपने पास रहने दो । हां, पर एकदम चौकस रहना ।" और वह चला गया ।

कुछ घंटों के बाद दरबान महेंद्रनाथ के लिए खाना लेकर लौटा । "ये रहीं चाबियां । इन्हें ध्यान से रखना । यह न हो कि बाहर चले जाओ," उसने शरारत से मुसकराकर कहा । "बाहर जाओगे तो जंगल ही जंगल है । इधर से रास्ता जानने वाला कोई विरला ही है । इसलिए इधर किसी के आने की उम्मीद नहीं ।"

दरबान जब चला गया तो महेंद्रनाथ सोचने लगा । मान लिया कि बाहर से आने वाला कोई नहीं, लेकिन अगर कोई भीतर से बाहर जाना चाहे तो? तब उसे क्या करना होगा? क्या वह उसे बाहर जाने दे? बहरहाल उसने यह निश्चय किया कि वह सावधान रहेगा ।

—(जारी)
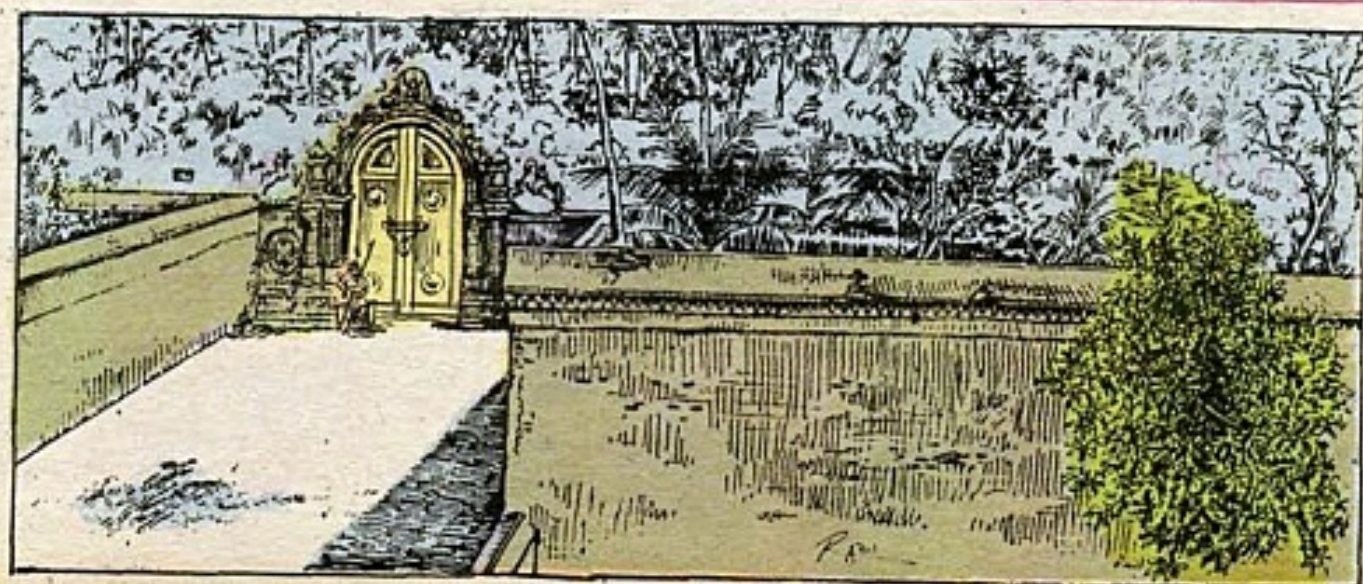
दायित्व किसे सौंपें?

एक गांव में मदनसिंह नाम का एक पहलवान रहता था । उसने अनेक कुश्तियां लड़ीं, अनेक पहलवानों को धूल चटायी और अनेक पुरस्कार प्राप्त किये । यह सब कुछ गांव के मुखिया से छिपा न था । इसलिए उसने मदनसिंह के कहने पर फौरन उसे गांव के पंचायत का चौकीदार नियुक्त कर दिया ।

मदनसिंह को गांव की तरफ से कर-वसूली का काम सौंपा गया, जिसे वह बड़ी ईमानदारी के साथ करता था । लेकिन एक रात चोरों ने मौका पाकर पंचायत घर का ताला तोड़ा और वहां से इकट्ठी की गयी तमाम राशि लेकर चंपत हो गये ।

मुखिया को जब इसकी खबर मिली तो उसका पारा एकदम चढ़ गया । उसने मदनसिंह को बुलवाया और उससे पूछा, "उन चोरों को तुमने क्यों नहीं पकड़ा? क्यों नहीं तुमने उनका मुकाबला किया? आखिर, बात क्या थी?"

इस पर मदनसिंह ने बड़े सहज भाव से कहा, "मालिक, जब मैं कुश्ती लड़ता हूं तो लोग सीटियां बजा-बजा कर मेरी हिम्मत बंधाते हैं । वे तालियां पीटते हैं जिससे अपने मुकाबले पर आये दूसरे पहलवान को पटकने के लिए मुझ में तूफानी जोश भर आता है । रात को चोर जब पंचायत का खज़ाना लूटने लगे, तो उस समय मुझे जोश दिलाने वाला कोई नहीं था । इसीलिए मैंने उनका सामना नहीं किया । मैं क्या करूं, लाचार था ।" और यह कहकर मदनसिंह अपनी मूंछों पर ताव देने लगा ।

मदनसिंह की बात सुनकर मुखिया की आँखें खुलीं । उसे पहली बार इस बात का एहसास हुआ कि किसी की शक्ल-सूरत देखकर ही उसे दायित्व नहीं सौंप देना चाहिए, उसके स्वभाव को जानना भी बहुत ज़रूरी है ।

—रामकृष्ण शास्त्री

साहसी अंगरक्षक

अपनी धुन का पक्का राजा विक्रम हमेशा की तरह श्मशान में उस पेड़ के पास गया, पेड़ की शाखा से लटकती लाश को उसने उतारकर अपने कंधे पर डाला और पहले की तरह मौन साधे श्मशान पार करने लगा । तब उस लाश में मौजूद बैताल बोला, ''राजन् मैं नहीं जानता किन दिव्य शक्तियों को प्राप्त करने के लिए आप इतना कठोर परिश्रम कर रहे हैं । लेकिन एक बात याद रखिए, परिश्रम के अनुपात में हमेशा उसका प्रतिफल नहीं मिलता । इसमें अपने-अपने नसीब का भी हाथ रहता है । किन्हीं का नसीब ऐसा होता है कि वे चाेहे जितना भी परिश्रम करें, कभी अपेक्षित ऊंचाई तक नहीं पहुंच पाते, और कुछ बिना परिश्रम किये ही मंज़िल के बाद मंज़िल पार करते जाते हैं । मिसाल के तौर पर मैं आपको जयसिंह नाम के एक ऐसे नौजवान की कथा सुनाऊंगा जिसने शूरवीर होते हुए भी कायरता से काम

बैताल कथाएं
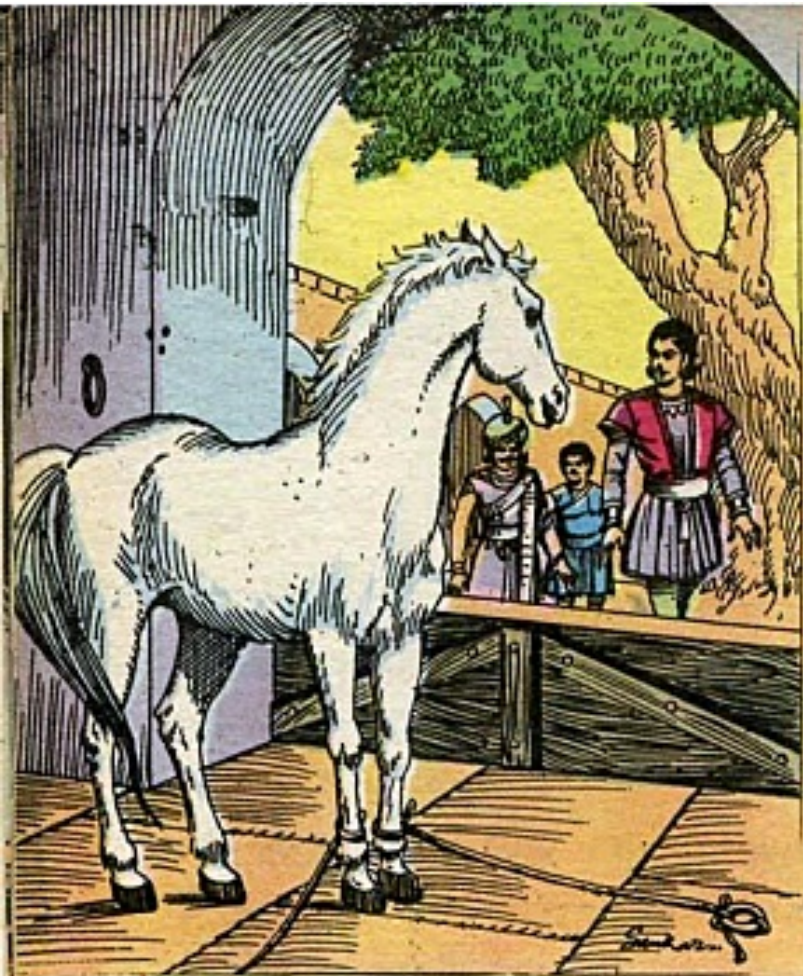
लिया । ध्यान से सुनें । इससे आपका रास्ता आसानी से कट जायेगा," फिर बैताल वह कहानी सुनाने लगा ।

वैशाली पर राजा विलास वर्मा का शासन था । उसके कोई बेटा नहीं था, केवल एक बेटी ही थी । बेटी का नाम मृणलिनी था । मृणालिनी अब सयानी हो गयी ।

राजा का एक अंगरक्षक था, जिसका नाम ज़यसिंह था । जयसिंह जवान तो था ही, काफी हृष्ट-पुष्ट भी था । इसके अलावा वह हर प्रकार की युद्ध-कला में प्रवीण था । खड्ग-युद्ध हो या मल्ल-युद्ध, या मुष्टि युद्ध ही क्यों न हो, उस राज्य में उसे हराने वाला कोई नहीं था । राजा को उस पर गर्व था । उसे उसके प्रति स्नेह भी था । उधर राजकुमारी मृणालिनी और अंगरक्षक जयसिंह एक-दूसरे के प्रति आकृष्ट भी थे । लेकिन यह बात किसी को पता न थी ।

एक दिन पाटलीपुत्र का युवराज दीप्ति वर्मा घूमते-घूमते वैशाली में आ पहुंचा । राजा विलास वर्मा ने उसका ज़ोरदार स्वागत किया, क्योंकि वह मन-ही-मन उसे अपना दामाद बनाने की ठान चुका था । उसके लिए उसने अंतःपुर में एक विशेष विश्रांम-कक्ष की व्यवस्था की, और सेवकों को आदेश दिया कि उसे हर प्रकार की सुविधा उपलब्ध करायी जाये ।

एक दिन शाम के समय विलास वर्मा दीप्ति वर्मा को साथ लेकर घुड़साल की ओर गया । वहां एक सफेद घोड़ा बंधा खड़ा था, जो सबसे अलग दिख रहा था । उसे देखकर दीप्ति वर्मा काफी जोश में आ गया और बोला, "मैं अभी इस पर बैठकर इसे थोड़ा घुमाकर लाता हूं ।"

दीप्ति वर्मा की बात सुनकर राजा विलास वर्मा घबरा गया । उसे समझाते हुए कहने लगा, "जल्दी मत करो, बेटे । इस घोड़े को यहां आये अभी एक हफ्ता भी नहीं हुआ है । घोड़े को चलाने वाले अभी तक इसे अपने काबू में नहीं ला पाये हैं । अकेला जयसिंह ही ऐसा है जिसने पहले दिन ही इसे अपने काबू में कर लिया ।"

जयसिंह भी वहीं खड़ा था । दीप्ति वर्मा को सवारी करने के लिए लालायित देखकर उसने कहा, "आप इस पर सवारी

करना ही चाहते हैं तो मुझे भी साथ ले लीजिए।"

दीप्ति वर्मा को जयसिंह का सुझाव अच्छा नहीं लगा। उसने उसकी ओर तिरस्कार से देखा और कहा, "ओह, तो तुम यही समझे बैठे हो कि तुम ही एक ऐसे घुड़सवार हो जो इस घोड़े की सवारी कर सकते हो। बाकी सब नामाकूल हैं।" और यह कहकर दीप्ति वर्मा उछलकर उस घोड़े पर जा बैठा।

दीप्ति वर्मा का उस पर बैठना था कि घोड़ा हवा से बातें करते हुए दौड़ने लगा। दीप्ति वर्मा के लिए उसे काबू में ला पाना उसके बूते से बाहर हो रहा था। घोड़ा अब बहुत ही अजब चाल से दौड़ रहा था। आखिर उसने दीप्ति वर्मा को पत्थरों पर दे पटका। इससे दीप्ति वर्मा के सर और शरीर के अन्य भागों पर काफी चोटें आयीं।

सैनिक दीप्ति वर्मा के पीछे-पीछे ही आ रहे थे। उन्होंने फौरन उसे राजभवन में पहुंचाया और राजवैद्य को बुलाया गया। राजवैद्य ने तुरंत उसका इलाज शुरू कर दिया, जिससे एक ही सप्ताह में दीप्ति वर्मा के घाव भरने लगे और वह भला-चंगा होने लगा। लेकिन कमज़ोरी उसे अब भी काफी थी, इसलिए वह अभी ठीक से चल भी नहीं पा रहा था।

उन्हीं दिनों राजा विलास वर्मा उसे देखने गया। उस समय युवरानी मृणालिनी और अंगरक्षक जयसिंह उसके साथ ही थे। दीप्ति वर्मा ने जयसिंह की ओर क्रोध से देखते हुए कहा, "जयसिंह, तुम्हारे बारे में यहां हर किसी से तुम्हारी प्रशंसा सुने जा रहा हूं। वे कहते हैं कि राज्य भर में तुम्हीं अकेले अपनी तरह के बहादुर हो। अगर तुम सचमुच ऐसे बहादुर हो तो मेरे साथ मल्लयुद्ध या खड्ग युद्ध करो। अगर तुम मुझ पर विजय पा लोगे तो तुम इस राज्य के ही नहीं, समूचे संसार के बेजोड़ वीर माने जओगे।"

लेकिन दीप्ति वर्मा की हालत ऐसी थी कि वह ठीक से अपना पांव भी उठा नहीं पा रहा था। ऐसी हालत में यह मल्लयुद्ध या खड्ग युद्ध करेगा? राजा विलास वर्मा को यह सोचकर बड़ी हैरानी हुई। लेकिन युवरानी मृणालिनी को बड़ी उत्सुकता हो

रही थी । उसे प्रतीक्षा थी कि देखें जयसिंह इस चुनौती का क्या उत्तर देता है ।

जयसिंह थोड़ी देर के लिए चुप रहा । फिर बोला, "क्षमा कीजिए, युवराज । आप, बेशक, एक बहुत बड़े वीर हैं । इसीलिए यद्यपि आप अभी तक पूरी तरह स्वस्थ भी नहीं हुए हैं, फिर भी मेरे साथ युद्ध करने केलिए तैयार हो गये हैं । लेकिन फिलहाल मैं आपसे युद्ध नहीं कर सकता । इसके लिए मुझे क्षमा करें ।"

इस घटना के कुछ दिन बाद ही राजा विलास वर्मा अपने कुछ सैनिकों के साथ आखेट के लिए निकला । वह रथ पर सवार था और उसके साथ उसका अंगरक्षक जयसिंह भी था ।

एक स्थल पर घनी झाड़ियां थीं । उनके पीछे एक शेर बैठा था । राजा को आते देख वह शेर अचानक झाड़ियों से बाहर आया और राजा पर झपट पड़ा । राजा का रंग एकदम फ़क पड़ गया । शेर की दहाड़ से सैनिकों के घोड़े भी बिदक गये और इधर-उधर दौड़ने लगे । जयसिंह को इतना समय भी नहीं मिला कि वह म्यान में से अपनी तलवार निकाल सकता । इसलिए वह निहत्था ही शेर से भिड़ गया । शेर तो आखिर शेर ही था । जयसिंह काफी सतर्क था, फिर भी शेर के वार सह पाना कोई आसान न था । दोनों के बीच घमासान लड़ाई चल रही थी । आखिर जयसिंह ने ऐसा वार किया कि शेर की गर्दन टूट गयी और उसके प्राण निकल गये ।

राजा विलास वर्मा अब अपने रथ से नीचे उतरा और जयसिंह को स्नेह से गले लगाते हुए उसने कहा, "जयसिंह, तुम जैसे शूरवीर को अपने अंगरक्षक के रूप में पाकर मैं धन्य हो गया । तुम कुछ भी मांगो, मुझे तुम्हें देते हुए असीम संतोष होगा ।"

"अन्नदाता, मैंने अपना कर्तव्य पूरा किया है । यह कोई खास बात नहीं ।" जयसिंह ने विनम्र स्वर में कहा ।

राजधानी पहुंचते ही राजा ने सबसे पहले राजवैद्य को बुलवाया और उसे जयसिंह के घावों को ठीक करने को कहा । राजवैद्य ने मनोयोग से उसकी चिकित्सा की । घाव गहरे तो थे, लेकिन एक ही पखवारे में भर

गये। जयसिंह पूरी तरह स्वस्थ हो गया।

इसके दो महीने बाद ही वसंत उत्सव था। उसी सिलसिले में तरह-तरह की प्रतियोगिताओं का अयोजन हुआ। एक मैदान में गोलाई में खूंटे गड़वाये गये और सुरक्षा व्यवस्था के साथ-साथ विशेष अखाड़े का प्रबंध किया गया। अखाड़े में एक बहुत तगड़ा सांड खड़ा कर दिया गया। राजा और उसकी बेटी, मृणालिनी, थोड़ी दूरी पर ऊंचे आसनों पर बैठे हुए थे। अखाड़े के चारों ओर दर्शकों की भीड़ थी।

सबसे पहले एक दरबारी उस सांड से लड़ने के लिए अखाड़े में उतरा। उसका नाम जयभेर था। भीड़ ने उसे प्रोत्साहित करने के लिए सीटियां बजानी शुरू कर दीं। लेकिन सांड एकाएक जयभेर पर झपटा। जयभेर ने उसे उसके सींगों से पकड़ लिया। वह कोई मामूली सांड तो था नहीं। उसने अपने नाथुनें से इतनी ज़ोर की हवा छोड़ी कि जयभेर उस हवा की चपेट में आकर दूर दर्शकों के बीच जा गिरा।

जयभेर क़े बाद नगर-रक्षक मार्तांडकेतु अखाड़े में उतरा, लेकिन उसकी भी वही हालत हुई।

जयसिंह राजा के समीप ही बैठा था। राजा ने उससे कहा, "तुम एक शूरवीर हो। तुमने अपने खाली हाथों से शेर को मार गिराया था। तुम्हारे लिए यह मस्त सांड क्या मायने रखता है। चलो, देर मत करो। अखाड़े में उतरो।"
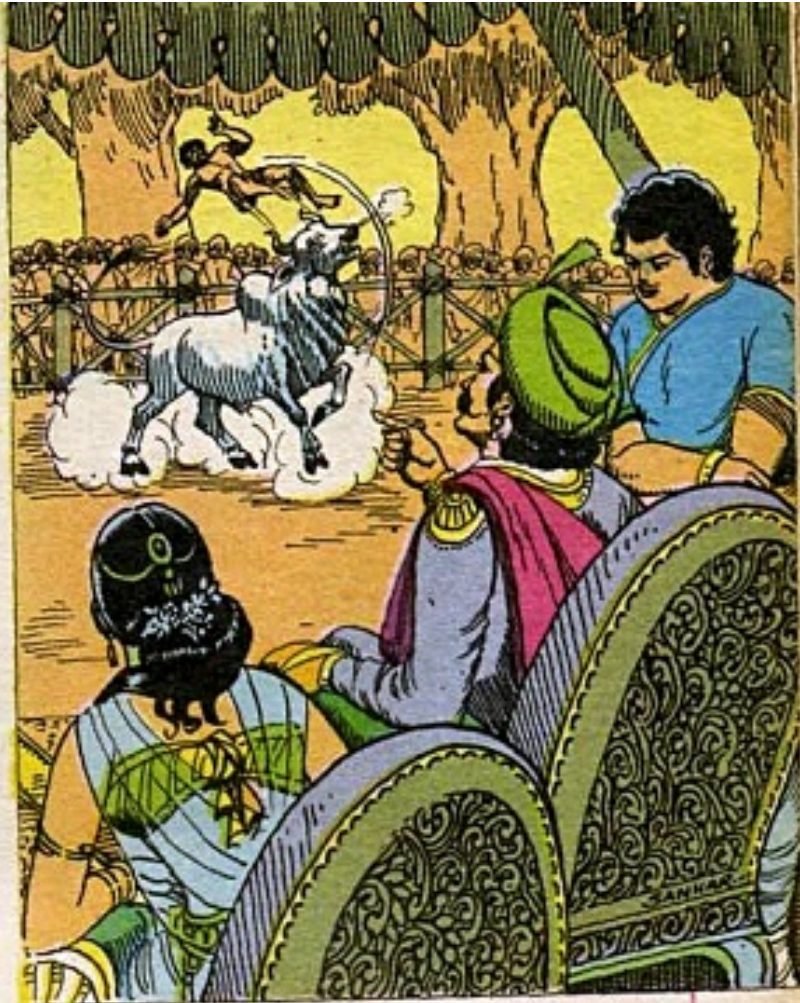
"नहीं, प्रभु। मुझे क्षमा कीजिए। मैं इस सांड से लड़ने में असमर्थ हूं।" जयसिंह ने याचना भरे स्वर में कहा।

इतने में एक अनहोनी घटना घटी। राजा ने अपने कंधों पर एक लाल शाल ओढ़ लिया। एकाएक सांड की नज़र उस पर पड़ी। लाल रंग को देखते ही वह भड़क उठा। उसने एक लंबी छलांग लगायी और सुरक्षा की व्यवस्था को लांघकर, दर्शकों को कुचलता हुआ, राजा पर वार करने के लिए लपकता हुआ चला आया। राजा का रंग एक बार फिर उड़ गया। उसे सूझा ही नहीं कि वह क्या करे। वह वहीं का वहीं बैठा रह गया। तभी युवरानी के मुंह से मारे डर के एक चीख निकली और वह बेहोश

हो गयी ।

जयसिंह की फुर्ती उस समय देखते ही बनती थी । वह बिजली की गति से अपनी जगह पर से उछला और सांड का रास्ता रोककर खड़ा हो गया । फिर उसने उसके दोनों सींगों को पकड़ा और उससे भिड़ गया । उसने उसके सींगों को इतनी ज़ोर से मरोड़ा और साथ ही उसके पेट पर इतने ज़ोर से लात मारी कि सांड एक ओर लुढ़क गया । फिर उसने उतने ही ज़ोर से उसकी गर्दन को मरोड़ा और उसके सर पर भी अपने सर से चोट की । सांड पीड़ा से तड़प उठा और खड़ा नहीं हो पाया । अब उसके नाथुनों से भी खून बह रहा था, और वह वैसे ही लुढ़क पड़ा था ।

दर्शकों के लिए यह दिल दहला देने वाला दृश्य था । सांड को परास्त हुआ देख वे जयसिंह की जयजयकार कर उठे । उसे उन्होंने अपने कंधों पर उठा लिया और मारे खुशी के नाचने लगे ।

तब तक राजा भी उसके निकट पहुंच गया था । उसने उसे अपनी बाहो में भरते हुए कहा, "जयसिंह, तुमने एक बार पहले भी मेरी जान बचायी थी । मैं तुम्हारा एहसान कैसे भूल सकता हूं ।" फिर उसने घोषणा की कि उस दिन की प्रतियोगिता का श्रेष्ठतम विजेता जयसिंह ही है ।

पर जयसिंह का स्वर गंभीर था । उसने कहा, "प्रभु, मुझे आप आज की प्रतियोगिता का श्रेष्ठ विजेता कैसे घोषित कर सकते हैं? मैं तो अखाड़े में उतरा ही नहीं । किंतु मेरा निवेदन है कि पहले आप घायल सांड की चिकित्सा का प्रबंध करवा दीजिए ।"

जयसिंह की बात पर राजा को हंसी आ गयी । उसके प्रति विशेष स्नेह जताते हुए उसने कहा, "जयसिंह, मैं तुम्हें बहुत चाहता हूं । इसलिए अपनी बेटी का विवाह मैं तुमसे ही करना चाहता हूं । क्या तुम इसके लिए राज़ी हो?"

"अगर आप मुझे इसके लिए योग्य समझते हैं और साथ ही युवरानी मृणालिनी को भी इसके लिए कोई आपत्ति नहीं है तो आपका यह प्रस्ताव शिरोधार्य है," जयसिंह ने सविनय उत्तर दिया ।

तब तक मृणालिनी होश में आ चुकी थी ।

उसने अपने पिता का प्रस्ताव और जयसिंह का उत्तर सुन लिया था। उसने मुस्करा कर अपनी सहमति जता दी।

बैताल ने यह कहानी सुनाकर कहा, "राजन्, युवरानी मृणालिनी के लिए तो पाटलीपुत्र का युवराज दीप्ति वर्मा ही कर लिहाज़ से योग्य था। मृणालिनी से विवाह करके वह राजा विलास वर्मा के बाद वैशाली का राजा बनने के भी योग्य था। साहसी और धैर्यवान तो वह था ही, क्योंकि उसने एक बड़े उद्दंड घोड़े को अपने काबू में लाने की कोशिश की थी। यदि वह अपने प्रयास में असफल भी रहा, तो इसमें उस पर किसी तरह की आंच नहीं आती। इसे हम दुर्भाग्य ही कह सकते हैं। और तो और, अभी तक वह घोड़े से गिरने के कारण आयी चोटों से पूरी तरह उभर भी नहीं पाया था कि उसने जयसिंह जैसे अद्वितीय शूरवीर को द्वंद्व-युद्ध के लिए ललकार दिया। यह उसके अपार साहस का ही प्रमाण है। इसके विपरीत जयसिंह का व्यवहार एकदम भिन्ना था। उसमें कहीं विरोधाभास भी दिखता है, बल्कि हम स्पष्ट रूप से यह नहीं कह सकते कि वह साहसी है या कायर। युवराज दीप्तिवर्मा के साथ द्वंद्व-युद्ध के लिए वह तैयार नहीं हुआ। शेर के साथ वह केवल राजा की सुरक्षा के लिए ही नहीं लड़ा, बल्कि उसे अपनी सुरक्षा का भी ख्याल था। इसी तरह उसने अखाड़े में उतरकर सांड से भिड़ने से भी इनकार कर दिया। इस सब से तो यही लगता है कि

शूरवीर की उपाधि उसे यों ही मिल गयी। दरअसल, वह किस्मत का धनी निकला। राजा ने स्वयं ही उसे अपना दामाद बनाना चाहा जिससे वह एक खासी ऊंचाई पर पहुंच गया। मेरे मन में इन सब बातों को लेकर कई प्रकार के संदेह उठ रहे हैं। मुझे इन संदेहों का निराकरण चाहिए। यदि आप सब कुछ जानते हुए भी मुझे सही उत्तर नहीं देंगे तो आपका सर फटकर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा।"

आखिर, राजा विक्रम को बोलना ही पड़ा, "ग़ौर से देखा जाये तो युवराज दीप्ति वर्मा में वे संस्कार, दूरदर्शिता और गांभीर्य नहीं दिखता जो कि एक युवराज के लिए आवश्यक है। उसमें केवल ईर्ष्या और डाह

ही दिखाई देती है । वह जयसिंह के यशोगान को सहन नहीं कर सका, और ईर्ष्यावश उस अड़ियल घोड़े पर सवार होकर यह जताने को हुआ कि वह जयसिंह से कहीं ज़्यादा साहसी और पराक्रमी है । जयसिंह ने जब उसके साथ चलने का सुझाव दिया तो उसने ईर्ष्यावश उसे भी ठुकरा दिया । इसी प्रकार यद्यपि घोड़े से गिरकर उसे पूरा स्वास्थ्य लाभ नहीं हुआ था, फिर भी उसने जयसिंह को द्वंद्व-युद्ध के लिए ललकारा । इसमें भी कहीं उसका कपट ही झलकता है ।उसने यह सोचा होगा कि यदि वह विजयी होगा तो उसे यश मिलेगा, और यदि पराजित हुआ तो उसका कारण उसकी अस्वस्थता बता दी जायेगी । लेकिन जयसिंह के बारे में ऐसा कुछ नहीं कहा जा सकता । उसके व्यवहार में कहीं भी विरोधाभास नहीं है । शेर से खाली हाथ लड़ने के पीछे आत्मरक्षा का कोई प्रयास नहीं दिखता, क्योंकि जिस प्रकार वह शेर पर लपका, उसके पीछे राजा को बचने की ही कोशिश थी । यदि वह कायर होता तो वह वहां से भाग खड़ा होता, या सैनिकों के बीच जाकर कहीं छिप जाता । मस्त सांड से जब भिड़ने की बात उठी, तब भी उसने सोच-समझकर ही अखाड़े में उतरने से इनकार कर दिया, क्योंकि वह अकारण ही सांड को घयाल नहीं करना चाहता था । उसके लिए यह बड़ा सस्ता मनोरंजन था । लेकिन जब वह सांड महाराजा की ओर लपका तो अंगरक्षक के नाते उसका यह कर्तव्य था कि वह राजा की रक्षा करता । इसलिए वह आनन-फानन सांड से भिड़ गया । यह सब कुछ राजा की आंखों के सामने घटा था । इसीलिए वह उसकी निगाहों में इतना ऊंचा उठ गया और राजा के दामाद का दर्ज पा गया, और इस तरह वैशाली का भावी राजा बनने का अधिकार भी पा गया ।"

बैताल को उत्तर देने से राजा विक्रम का मौन भंग हो चुका था । इसलिए लाश समेत बैताल वहां से ग़ायब हो गया, और पहले की तहर उसी पेड़ की शाखा से जा लटकने लगा । — (कल्पित)

चन्दामामा परिशिष्ट-४९

भारत के पशु-पक्षी

हुदहुद : राज सा, फिर भी गंदा

राजा सुलेमान अपने उड़न सिंहासन पर बैठा कहीं जा रहा था । उस समय सूरज की तपिश अपने ज़ोरों पर थी । पास से कुछ गिद्ध उड़ते हुए निकले, लेकिन उन्होंने उस पर छाया करने से इनकार कर दिया । सुलेमान ने उन्हें श्राप दिया जिसके परिणामस्वरूप उनकी गर्दन पर आज तक भी पर नहीं उगे । वहां से हुदहुद नाम के पक्षियों का एक समूह भी गुज़र रहा था । वे ठीक उसके ऊपर उड़ने लगे, जिससे राजा सूरज की तपिश से बच गया । उसने उन्हें पुरस्कृत करना चाहा । पक्षियों ने सोने की कलगी चाही । सुलेमान ने सुझाव दिया कि वे कुछ और मांगें । लेकिन उनका कहना था कि उन्हें केवल सोने की कलगी ही चाहिए । बहरहाल, उनकी इच्छा पूरी कर दी गयी । लेकिन सोने की कलगी होने के कारण उन्हें लोग बड़ी निष्ठुरता से मारने लगे । साथ ही सुलेमान को यह भी लगा कि उनमें बहुत घमंड आ गया है । इसलिए उसने उनकी सोने की कलगी को परों की कलगी बना दिया ।

हुदहुद की सबसे बड़ी पहचान यह कलगी ही है । भारत में यह पक्षी ऊपूपीडी परिवार का अकेला प्रतिनिधि है । इसकी दूसरी पहचान इसकी पीठ, परों और पूंछ पर काली और सफेद धारियां हैं । वैसे इसका रंग हलका पीला होता है, और इसकी लंबाई केवल एक फुट है"। पंखे के आकार की इसकी कलगी पीछे भी हट सकती है । जिस समय यह अपने खाद्य के लिए ज़मीन को कुरेद रहा होता है, उस समय यह कलगी पीछे की तरफ हो जाती है और इसके सर पर बिंदु की तरह उभर आती है । जब यह उत्तेजित होता है, तब यह कलगी पंखे की तरह खुल जाती है और हुदहुद राज सा प्रतीत होने लगता है ।

यह हुपो की आवाज़ निकालता है जो बहुत ही सुरीली होती है । इसी से इसका नाम हूपो या हुदहुद पड़ा ।

हुदहुद पक्षी के घोंसले दीवारों या छतों के सुराखों में या पेड़ों के कोटर में मिलते हैं । घोंसला बनाने में गंदे चीथड़, बाल, तिनके या कूड़ा-करकट काम में आते हैं जो बदबू से भरे रहते हैं । लेकिन यह पक्षी किसान का दोस्त माना जाता है, क्योंकि यह फसल नष्ट करने वाले कीड़ों का शिकार करता है ।

आज का भारत साहित्य-दर्पण में

उड़ीसा का एक जिला है कोरापुट। वहां मीलों-मील पहाड़ियां और जंगल फैले हुए हैं। उन पहाड़ियों और जंगलों में कई छोटे-छोटे गांव हैं। इन गांवों में जो लोग रहते हैं, उन्हें परजा और कोंड कहते हैं। इनके अलावा वहां दूसरी जनजातियां भी हैं। ये सभी जनजातियां बहुत ही सरल और छल-रहित हैं। इसी वजह से तथाकथित सभ्य दुनिया के कुछ चालाक व्यक्ति इनका बड़ी बुरी तरह से शोषण करते हैं।

सुक्रू जानी एक ऐसा ही गरीब परजा है। उसकी पत्नी को एक बाघ उठाकर ले गया है। अब पीछे रह गये हैं उसके दो बेटे और दो बेटियां। बेटों का नाम मांडिया और टिकरा है, और बेटियों का नाम जिली

परजा : पहाड़ों की संतान

और बिली है।

सुक्रू पर एक अदना-सा अधिकारी नाराज हो गया है। उसे खुश करने के लिए सुक्रू को उसे रिश्वत देनी पड़ती है। रिश्वत देने केलिए उसके अपने पास तो पैसा है नहीं, इसलिए उसे एक महाजन से उधार लेना पड़ता है। महाजन बड़ा लालची और ज़ालिम है। इस उधारी के एवज़ में सुक्रू को स्वयं को तथा अपने छोटे बेटे को उसके यहां रेहन रखना पड़ता है। उन्हें उसके यहां तब तक गुलामों की तरह काम करना होगा जब तक कि वे कुल राशि के साथ-साथ सूद-दर-सूद की राशि भी चुका नहीं देते। उनसे पहले कई गरीब आदिवासियों के लिए यह संभव न हो सका और परिणामस्वरूप वे तमाम उम्र गुलामों की तरह उसके यहां काम करते रहे। होते-होते यह एक प्रथा-सी बन गयी है जिसे 'गोटी' कहा जाता है।

सुक्रू का बड़ा बेटा मांडिया कच्ची शराब निकालते समय सरकारी कारिंदों द्वारा पकड़ लिया गया। उसे भी रिश्वत देनी पड़ी और रिश्वत की राशि जुटाने के लिए उसे भी उसी सूदखोर महाजन के पास जाना पड़ा। इस प्रकार अपने पिता और छोटे भाई की तरह मांडिया भी एक गुलाम बन गया।

दोनों लड़कियां एक खदान में काम करने जाती थीं। सुक्रू ने हिसाब लगाया कि वे कभी भी इतना नहीं कमा सकेंगे जिससे कि वे सब आज़ाद हो सकें। इसलिए उन्होंने महाजन के यहां अपनी ज़मीन का टुकड़ा

रेहन रख दिया जिससे उन्हें आजाद कर दिया गया।

सुक्रू आब अपनी बेटियों को भी घर ले आया था। लेकिन बेटियों की आदत तो बदल गयी थी। वे स्वतंत्र रूप से रहना चाहती थीं। बड़ी लड़की, जिली, झोंपड़ी के भीतर घुट कर नहीं रह जाना चाहती थी। इसी वजह से जब महाजन ने उनके गांव में डेरा डाला और उस लड़की के प्रति अपनी आसक्ति दिखायी, तो लड़की ने भी उससे चुपके-चुपके मिलना शुरू कर दिया।

लेकिन जल्दी ही यह बात जग-ज़ाहिर हो गयी। सुक्रू गुस्से से बावला हुआ जा रहा था। पर वह कर भी क्या सकता था। एक परजा युवती ने जब स्वतंत्रता का स्वाद चख लिया था तो उस पर लगाम कौन डाल सकता था? महाजन उसे अपने यहां ले गया, और सुक्रू तथा उसके बेटों को मुंह की खानी पड़ी।

मांडिया और टिकरा जवान थे। उनके शरीर में दम था। इसलिए उन्होंने खूब जमकर मेहनत की और सूदखोर महाजन की सारी देनदारी खत्म कर दी। इस पर भी महाजन उन्हें उनकी ज़मीन का वह टुकड़ा लौटाने को तैयार नहीं था। क्योंकि उसमें उसने नारंगियों की बुवाई शुरू कर दी थी। सुक्रू को मजबूर होकर कोरापुट में कचहरी की शरणमें जाना पड़ा। सुनवाई के लिए एक तारीख मुकर्रर हुई। लेकिन महाजन ने कचहरी के कर्मचारियों को रिश्वत खिला दी जिससे उन्होंने सुक्रू को गलत तारीख दे दी। सुक्रू और उसके बेटों को पूरी उम्मीद थी कि वे मुकदमा जीत जायेंगे, लेकिन जिस समय वे शहर पहुंचे, मुकदमे का फैसला महाजन के हक में सुनाया जा चुका था।

बेचारे तीन परजाओं की आंखों के सामने अंधेरा छा गया। वे ज़ार-ज़ार रोने लगे और रोते-रोते महाजन के यहां पहुंचे। उन्होंने उससे मिन्नत की कि वह उन पर दया करे और उनकी ज़मीन लौटा दे, लेकिन महाजन टस-से-मस न हुआ, बल्कि वह उन्हें गालियां देने लगा और उन्हें ठोकरें मारते हुए बड़ी बेशरमी से बोला, "अभी तक मैंने केवल तुम्हारी एक ही लड़की को अपना गुलाम बनाया है। अब मैं तुम्हारी दूसरी लड़की के साथ भी ऐसा ही करूंगा।"

एकाएक सुक्रू के हाथ की कुल्हाड़ी बिजली की गति से दुष्ट महाजन पर जा पड़ी। "तुमने हमारी ज़मीन हड़प तो ली, लेकिन तुम उसे भोग नहीं सकोगे।" वे तीनों एकसाथ चिल्लाये।

उनके चिल्लाने की आवाज सुनकर जिली बाहर आयी, लेकिन मारे घबराहट के वहां से भाग खड़ी हुई।

वे तीनों भोले-भाले आदिवासी स्वयं ही सीधे थाने जा पहुंचे। अपने साथ वे महाजन का सर भी लिये हुए थे।

"हमने उसे खत्म कर दिया है। हमारे साथ जेसा सलूक करना चाहते हो, करो," उन्होंने वहां के अधिकारी से कहा।

अधिकारी मारे भय के थर थर कांपते हुए जोर से चिल्ला उठा।

इस उपन्यास के लेखक हैं गोपीनाथ मोहंती (१९१४-१९९१)। उड़िया के वह आज के महानतम उपन्यासकार माने जाते हैं। साहित्य अकादेमी तथा ज्ञानपीठ पुरस्कार पाने वाले भी वह पहले उड़िया लेखक हैं।

क्या तुम जानते हो?

१. मंदिरों वाला वह कौन सा नगर है जो इंद्रगिरि और चंद्रगिरि नाम की दो पहाड़ियों के बीच स्थित है?
२. फारस की बुनियाद किसने रखी?
३. नवंबर, १९९० को कौन सी महान घटना घटी?
४. मंगोलिया के उस सम्राट का नाम बताओ जिसने चीन पर विजय प्राप्त की थी?
५. बंगला देश का जन्म कब हुआ?
६. वह समाज सुधारक कौन था जिसने ब्रह्मसमाज की नींव रखी और "सती" जैसी कुप्रथा का जमकर विरोध किया?
७. इस वर्ष १२ अक्तूबर को कौन सी ऐतिहासिक घटना मनायी गयी?
८. मोपला किन्हें कहते हैं?
९. अमरीका का राष्ट्रीय पक्षी क्या है?
१०. भारतीय पुराणों के अनुसार वह कौन व्यक्ति था जिसकी मृत्यु एड़ी में बाण लगने से हुई?
११. रंगों के आधार पर चार सागरों का उल्लेख किया जाता है। वे सागर कौन से हैं?
१२. संसार की सबसे लंबी रेल की पटरी की लंबाई कितनी है?
१३. वह कौन सी महिला है जिसे दो बार नोबेल पुरस्कार मिला?
१४. चश्मोंमें इस्तेमाल होने वाले बाइ-फोकल लैंस का आविष्कार किसने किया था??
१५. युनेस्को द्वारा प्रायोजित पहला अंतर्राष्ट्रीय नगर कौन-सा है? यह कहां स्थित है।

उत्तर

१. श्रावणबेलगोल।
२. सायरस महान-५०० और ४०० ईसा पूर्व के बीच।
३. बर्लिन की दीवार, इसका निर्माण १९६९ में हुआ था। यह पश्चिमी और पूर्वी जर्मनी को एक दूसरे से अलग करती थी। ९ नवंबर १९९० को दोनों जर्मनियों को एक करने के लिए इसे प्रतीकात्मक रूप से तोड़ दिया गया।
४. कुबलाई खान।
५. दिसंबर, १९७१।
६. राजा राममोहन राय।
७. क्रिस्टोफर कोलंबस के पहले पहल अमरीका पहुंचने की ५०० वीं वर्षगांठ।
८. केरल के मालाबार क्षेत्र में रहने वाले मुसलमान।
९. गंजे सर वाली चील।
१०. भगवान कृष्ण।
११. श्वेत, काला, लाल तथा पीला सागर।
१२. मास्को से व्लादीवास्तक तक जाने वाली साइबेरिया-पार रेल की पटरी, जो ५,८६४ मील लंबी है, और जिसे तय करने में आठ दिन लगते हैं।
१३. मेरी क्यूरी।
१४. बेंजामिन फ्रेंकलिन।
१५. पांडिचेरि में ऑरोविले।

प्रेत की हार

सुरेंद्र एक साधारण नौजवान था। उसकी शादी सुनीता नाम की एक साहसी युवती से हुई थी। सुरेंद्र को प्रीतनगर में नौकरी मिली थी।इसलिए वह वहीं एक घर की तलाश करने लगा। उसकी पत्नी भी उसके साथ थी। सारा प्रीतनगर उन्होंने छान मारा, लेकिन उन्हें कहीं भी किराये पर मकान नहीं मिला।

खोजते-खोजते वे प्रीतनगर के छोर पर आ पहुंचे। वहां उन्हें एक मकान दिखाई दिया जिस पर ताला पड़ा था। पूछताछ करने पर उन्हें पता चला कि वह मकान धनपति नाम के एक व्यापारी का है। धनपति की कुछ वर्ष पहले एक नाव दुर्घटना में मृत्यु हो चुकी थी। नाव में उसके साथ उसके परिवार के बाकी सदस्य भी थे। अब वह इसी मकान में प्रेत बनकर रहता है और अगर कोई अपना मन मज़बूत करके और प्रेत वाली बात पर ध्यान दिये बिना वहां रहने की कोशिश करता भी है, तो प्रेत उसे उस मकान को छोड़ने पर अवश्य मजबूर कर देता है।

सुरेंद्र ने जब यह बात सुनी तो वह घबरा गया, और अपनी पत्नी से बोला, "मुझे तो भूत-प्रेत के नाम से ही डर लगता है। मैं ऐसे घर में हरगिज़ नहीं रहूंगा।"

"मुझे ऐसी बातों में यकीन नहीं। और अगर भूत-प्रेत हों भी तो मैं उनसे नहीं डरती। दूसरे, अगर हम इस घर में रहेंगे तो हमें किराया भी नहीं देना पड़ेगा। रहा वह प्रेत, उसे मैं संभाल लूंगी।" और यह कहकर सुनीता ने अपने डरने वाले पति को आश्वस्त किया।

सुरेंद्र मजबूर था। उसे पत्नी की बात माननी पड़ी। उसने वहां के लोगों से पूछा कि इस घर की चाबी कहां मिलेगी। चाबी

जगदीश श्रीवास्तव

का किसी को पता न था। पर उन लोगों ने यह ज़रूर कहा कि यदि वह उस घर का ताला तोड़ भी देता है तो उन्हें कोई आपत्ति न होगी।

बहरहाल, सुरेंद्र और सुनीता ने एक निर्णय पर आकर उस घर का ताला तोड़ दिया और घर के भीतर हो लिये। वहां घर की हालत देखकर दोनों, पति-पत्नी, चकित रह गये, क्योंकि वहां की हर चीज़ अपने ठिकाने पर थी, और कहीं भी धूल या मिट्टी का नाम न था। एक कमरे में एक पलंग लगा था और उस पर साफ-सुथरी चादर बिछी थी।

यह सब देखकर सुरेंद्र मारे डर के घिघियाने लगा और घिघियाते-घिघियाते बोला, "ज़रूर इस घर में धनपति का प्रेत रहता है। वरना यहां हर कहीं हर चीज़ इतने करीने से न लगी होती"।

सुरेंद्र का यह कहना था कि धनपति का प्रेत उनके सामने आ खड़ा हुआ और बोला, "मैं ही धनपति हूं। इस मकान पर मैंने ढेरों खर्च किया, इसीलिए मेरा मन इसमें अटका हुआ है और मैं यहीं विचरता रहता हूं। तुम लोग इस घर में रहना चाहते हो तो रहो, मुझे कोई एतराज़ नहीं। हां, एक बात है-इस घर को तुम्हें इसी तरह हमेशा साफ-सुथरा रखना होगा, वरना मैं तुम लोगों की हालत खराब कर दूंगा। मैं पहले ही तुम्हें सावधान किये दे रहा हूं।"

प्रेत को अपने सामने पाकर सुरेंद्र की तो घिग्घी बंध ही गयी थी, पर उसकी पत्नी, सुनीता, वैसे की वैसी ही खड़ी रही, बल्कि प्रेत की पीठ थपथपा कर कहने लगी, "जो तुमने कहा वह तो ठीक है, लेकिन यह तो बताओ कि अभी तुम इस घरमें रहते किस कमरे में हो?"

प्रेत ने सुनीता को वह कमरा दिखा दिया जिसमें वह रहता था, और साथ ही यह चेतावनी भी दी कि कोई उस कमरे में दाखिल होने का साहस न करे।

खैर, अब सुनीता का घर-परिवार बस गया था। वह घर का सारा कूड़ा इकट्ठा करके एक ही जगह पिछवाड़े में रखने लगी। अभी एक हफ्ता ही बीता था कि कूड़े का यह ढेर काफी बड़ा हो गया था।

प्रेत ने जब यह ढेर देखा तो उसे अच्छा

नहीं लगा। उसने सुनीता को धमकी दी कि वह उस ढेर को वहां से उठवा दे, नहीं तो परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहे। लेकिन सुनीता ने उसकी धमकी पर ध्यान नहीं दिया, बल्कि घर में हर कहीं कूडे के ढेर लगाने लगी। होते-होते समूचा मकान गंदगी से भरने लगा।

यह बात सुरेंद्र से भी छिपी न रही। एक दिन वह सुनीता से बोला, "यह तुम ठीक नहीं कर रही। प्रेत ने हमें पहले ही सावधान कर दिया था। हमने अगर उसकी बात नहीं मानी तो वह हम दोनों का गला घोंटकर हमें मार डालेगा। कृपा करके मकान को साफ रखो।"

सुनीता ने बहाना बनाया, "क्या करूं, बचपन से ही मुझे काम करने की आदत नहीं। अब सीख लूंगी।" और बात आयी-गयी हो गयी।

धीरे-धीरे पिछवाड़े में अब बेहद कूड़ा जमा हो गया था जो सड़ने की वजह से बदबू देने लगा था।

एक रात प्रेत सुनीता की खटिया के छोर पर आ बैठा, और ज़ोर-ज़ोर से चीखने लगा, "मैंने पहले ही कहा था कि गंदगी मुझे किसी भी रूप में बरदाश्त नहीं। पिछवाड़े के कूड़े से इतनी बदबू आ रही है कि उससे मेरी नाक की नसें फटने लगी हैं। तुमने मेरी बात नहीं मानी, इसलिए मैं इसी क्षण तुम्हारा काम तमाम किये देता हूं।

पर सुनीता प्रेत की बात से ज़रा भी विचलित नहीं हुई, बल्कि उसने प्रेत को अपनी खटिया पर से नीचे धकेल दिया और कहने लगी, "माना कि प्रेत मानवों को डरा सकते हैं, लेकिन मानवों को मारने की शक्ति उनमें नहीं होती, यह बात मैं अच्छी तरह जानती हूं।" और यह कहते ही उसने भद्रकाली का रूप धारण कर लिया और गुस्से में वहां पड़ी एक झाड़ू को अपने हाथ में ले लिया।

सुनीता के हाथ में झाड़ू देखकर प्रेत वहां कीं-कीं करते हुए भाग खड़ा हुआ, लेकिन वहां से भागते हुए कहता गया, "ठीक है, तुम जो चाहो करो! जितनी गंदगी फैलाना चाहती हो, फैलाओ! मैं उसमें दखल नहीं दूंगा, लेकिन दया करके मेरे कमरे की

तरफ मत आना ।"

"आधी रात के समय तुमने यहां आकर मेरी नींद खराब कर दी," सुनीता ने बज-बजाते हुए कहा । "क्या बढ़िया नींद आ रही थी! तुम जाओ । तुम्हारे कमरे की बात मैं कल सोचूंगी ।"

सुबह होते ही सुनीता ने पिछवाड़े से कुछ कूड़ा उठाया और उसे लाकर प्रेत के कमरे में बिखेर दिया । प्रेत मारे खीझ के एकदम खड़ा हो गया और गुस्से से बोला, "तुमने तो इस घर को नरक बना दिया है । मैं ऐसे नरक में एक पल भी नहीं रह सकता । मैं इसी क्षण इस घर को छोड़कर जा रहा हूं । जंगल में किसी पेड़ पर रह लूंगा, पर यहां नहीं रहूंगा ।चलो, जीत तुम्हारी ही हुई । लेकिन जाते-जाते मैं तुमसे एक बार फिर कहना चाहता हूं कि थोड़ी सफाई रखना सीखो, वरना ऐसा न हो कि एक दिन तुम्हारा पति भी इस गंदगी से तंग आकर तुम्हें छोड़कर जंगल में भाग जाये ।" और यह कहकर प्रेत वहां से चला गया ।

शाम को जब सुरेंद्र घर आया तो सुनीता ने उसे सारी बात विस्तार से कह सुनायी ।सुनीता की बात सुनकर सुरेंद्र भी गुस्से में आ गया और कहने लगा, "प्रेत ने ठीक ही कहा था । तुम घर को साफ रखना सीखो, वरना मैं भी एक दिन यहां से भाग जाऊंगा ।"

पति की बात सुनकर सुनीता ने अपनी आंखें नचायीं और बोली, "मैं थोड़ी काहिल ज़रूर हूं, लेकिन उतनी नहीं जितनी प्रेत ने मुझे समझा था । अब कल से आपको यह घर बिलकुल साफ-सुथरा मिलेगा ।"

"तो तुम्हारी काहिली अभी गयी नहीं । तुमने आज की बात फिर कल पर टाल दी । कल से नहीं, मुझे आज से ही, बल्कि इसी पल से, यह घर साफ-सुथरा चाहिए ।"

सुनीता समझ गयी थी कि उसका पति उसे मीठी फटकार दे रहा है । उसे वह फटकार अच्छी लगी । वह उसी क्षण घर की सफाई में जुट गयी ।

चंदन जैसा व्यक्ति

एकदिन सुबह-सुबह मुहल्ले में से महेश नाम का एक व्यक्ति गुज़र रहा था। उसका चलने का ढंग बुज़र्गों वाला था। सदानंद ने उसे देखा और पुकारते हुए कहा, "सुनिए महेश जी। आपसे एक छोटा-सा काम है।"

महेश रुक तो गया, लेकिन साथ ही बोला, "जल्दी बताओ, क्या काम है। मैं किसी ज़रूरी काम से जा रहा हूं।"

"कोई खास बात तो नहीं, सिर्फ यही जानना चाहता था कि शिवमंदिर के निकट रहने वाला चंदन किस तरह का आदमी है।" सदानंद ने कहा।

सदानंद का सवाल सुनकर महेश पलभर के लिए चौंका। फिर संभल कर बोला, "कहो, क्या बात है?"

"बस, यों ही। उसने मुझसे थोड़ी-सी रकम बतौर कर्ज़ मांगी है। मैं इस गांव में नया हूं। इसीलिए सोचा कि आप जैसे किसी जानकार व्यक्ति से सलाह ले लूं। इसलिए मैंने उसे दो दिन बाद आने को कहा है।" सदानंद ने अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहा।

सदानंद की बात सुनकर महेश मन ही मन हंसा। उसकी समझ में नहीं आया कि सदानंद वाकई अबोध है या कुछ ज़रूरत से ज़्यादा सावधान है। एक पल रुककर उसने कहा, "चंदन अपनी बात का पक्का नहीं। सच कहूं तो वह अपना दायित्व भी ठीक से निभाना नहीं जानता। ऐसे व्यक्ति को मुंह लगाना अपनी नींद हराम करना है।" यह कहकर महेश आगे बढ़ गया।

सदानंद, दरअसल, बाढ़ में अपना घर-बार और संपत्ति सब कुछ खो चुका था। उसके एवज़ में सरकार से उसे राहत के रूप में कुछ राशि मिली थी, जिसे लेकर

वह इस गांव में चला आया था और यहां उसने उस राशि के कुछ भाग से थोड़ी जमीन खरीद ली थी, और कुछ राशि उसने बचा ली थी ताकि ज़रूरत के वक्त उसे काम में लाया जा सके । दूसरे, वह पैसे की कीमत समझता था । इसीलिए उसने कर्ज़ मांगने वाले चंदन के बारे में जानकारी प्राप्त करनी चाही ।

जैसा कि तय हुआ था, दो दिन के बाद चंदन सदानंद के यहां आया और उसने फिर पैसे की बात उठायी । सदानंद उसके बारे में जान तो गया ही था, इसलिए उसने यों ही कह दिया कि वह उसके लिए पैसे का इंतज़ाम नहीं कर पाया ।

सदानंद का उत्तर पाकर चंदन गिड़गिड़ाने लगा और बोला, ''मैं इस समय सख्त ज़रूरत में हूं । मेरी पत्नी की तबीयत ठीक नहीं है । वैद्य ने सलाह दी है कि मैं उसे शहर में ले जाकर किसी बड़े चिकित्सक को दिखाऊं । गांव के सब लोग जानते हैं कि मैं एक ईमानदार और इ़ज्जतदार व्यक्ति हूं और अपने वायदे पर हमेशा कायम रहता हूं । मैं आपसे वायदा करता हूं कि मैं आपका पैसा एक ही महीने में लौटा दूंगा । आप कृपया मुझे न मत कहिए ।''

चंदन के गिड़गिड़ाने से सदानंद कुछ नरम पड़ गया और बोला, ''अच्छा, ठीक है । कल आ जाना ।''

चंदन जब चला गया तो सदानंद अपने घर से बाहर निकला और शिवमंदिर की ओर चल दिया । सुबह का समय था । मंदिर का पुजारी जल्दी में स्नान करके गीले कपड़ों
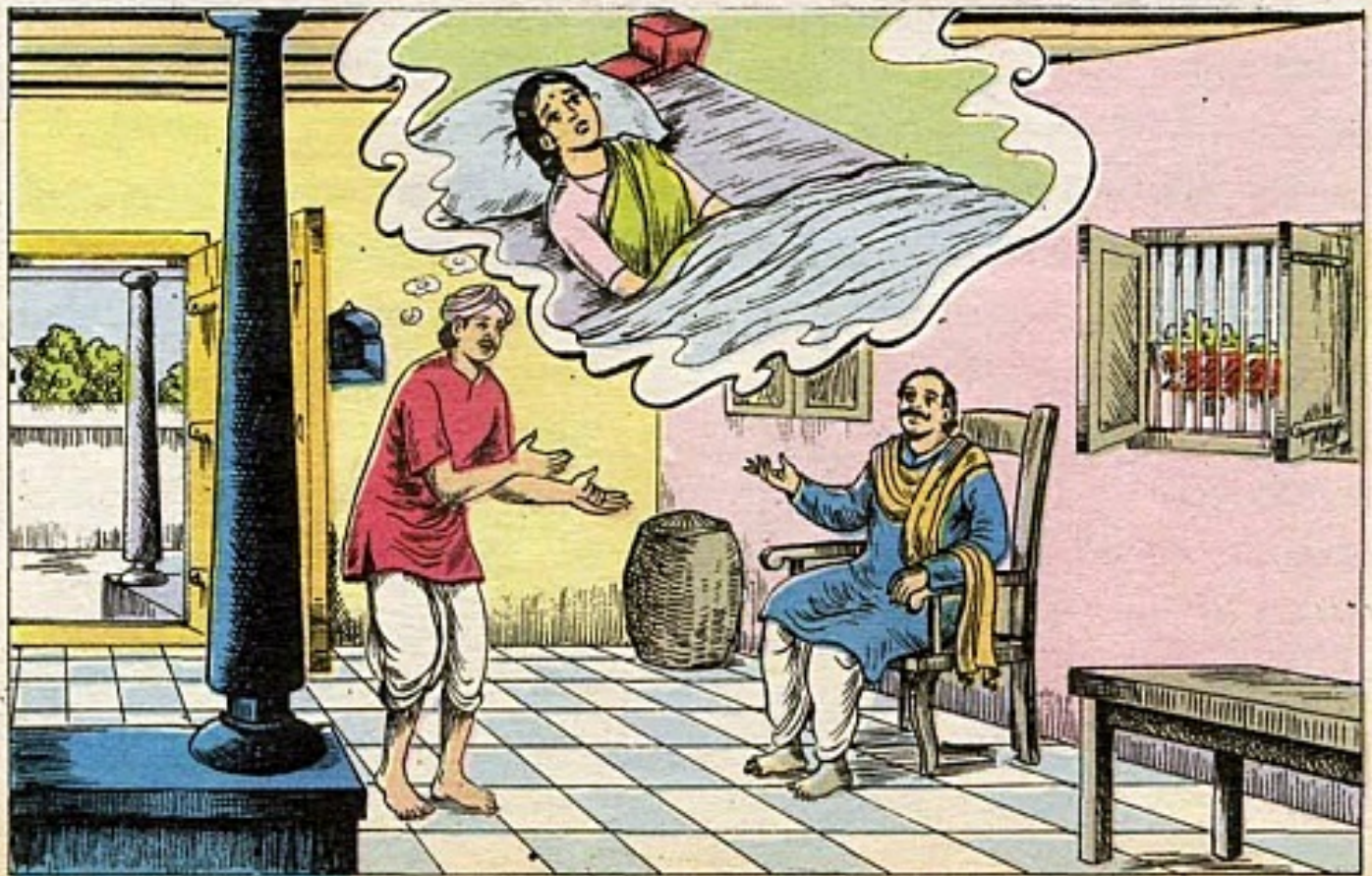
में ही मंत्रोच्चारण करते हुए वहां दिखाई दिया । सदानंद ने पुजारी को प्रणाम किया और जल्दी में उसे अपनी समस्या बतायी और कहा, "पुजारी जी, लगता है चंदन वाकई काफी तंगी में है । मैं उसकी मदद करना चाहता हूं । कृपया मुझे बताइए कि आपकी उसके बारे में क्या राय है । जब महेश से मैंने उसके बारे में पूछा तो उसने यही कहा कि चंदन भरोसेमंद व्यक्ति नहीं है ।"

पुजारी थोड़ा रुका । फिर सदानंद की ओर ध्यानपूर्वक देखते हुए बोला, "दूसरों के बहकावे में मत आना और न ही उनकी कथनी पर जाना, वरना बरबाद हो जाओगे ।" इतना कहकर पुजारी चला गया ।

सदानंद दुविधा में पड़ गया और उसी दुविधा में घर वापस चला आया । दूसरे दिन जब चंदन उसके यहां आया तो उसने चुपचाप उसके हाथ पर उसकी ज़रूरत की राशि रख दी ।

ऐसे ही चार-पांच महीने बीत गये, पर चंदन ने पैसा नहीं लौटाया । इंतज़ार करते-करते, आखिर सदानंद ऊब गया । इसलिए वही चंदन का घर ढूंढ़ते-ढूंढ़ते उसके यहां जा पहुंचा ।

सदानंद को देखकर चंदन ज़रा भी विचलित नहीं हुआ, बल्कि बड़े ठसके के साथ बोला, "तुम्हारा पैसा कहीं नहीं जायेगा । घबराओ नहीं, दे दूंगा । फिलहाल मेरे पास कोई पैसा नहीं है । जब हाथ लगेगा, तब खबर कर दूंगा । आकर ले जाना ।"

सदानंद ने दो महीने और इंतज़ार किया, लेकिन परिणम कोई नहीं निकला । और
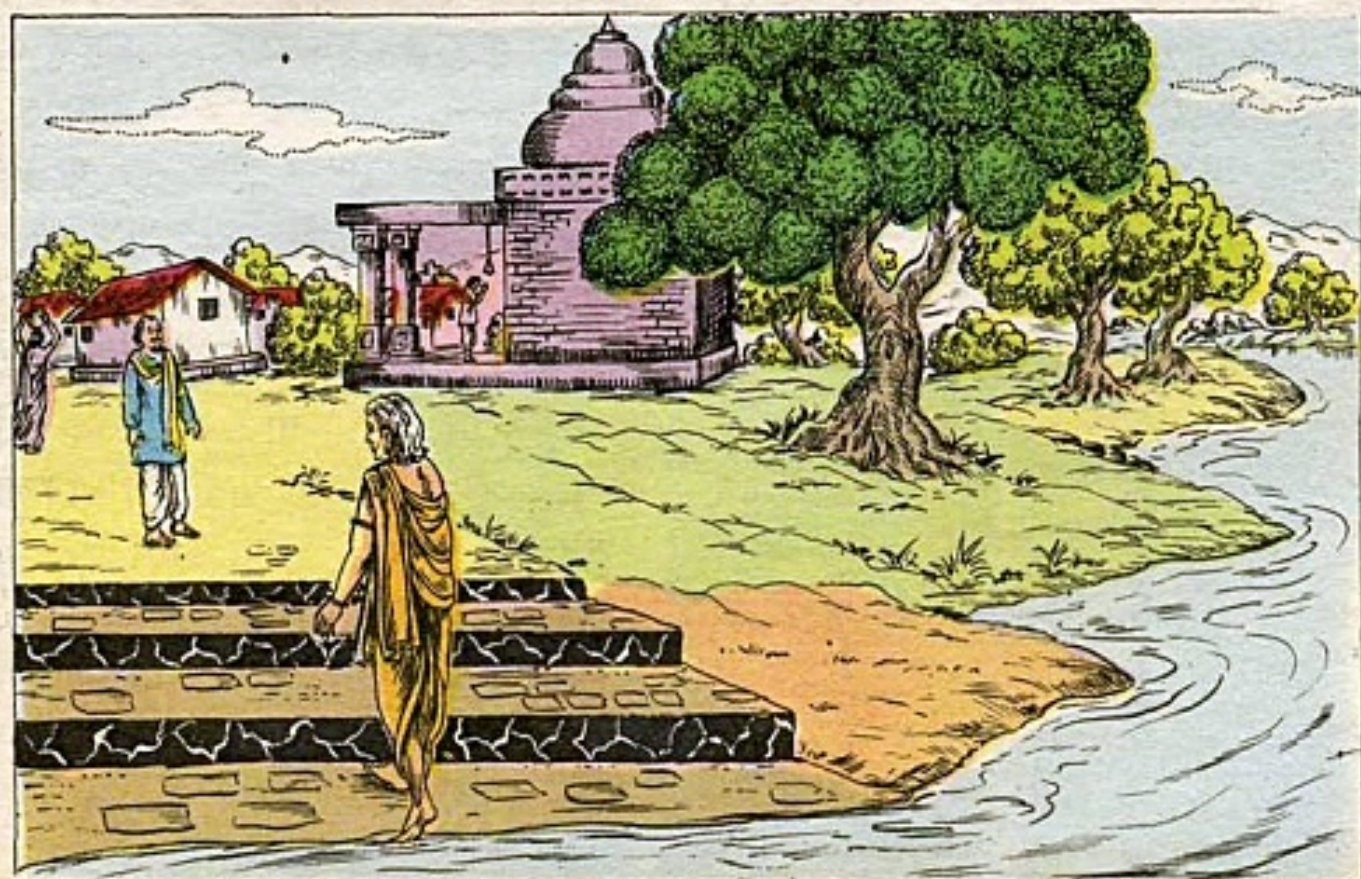
तो और, जब कभी चंदन का उससे सामना हो जाता तो वह बिना उससे बात किये आगे निकल जाता ।

जब सदानंद को अपनी सारी आशाएं धूमिल होती दिखीं तो वह एक दिन पुजारी के पास गया और उससे बोला, "यह सब आपके कारण हुआ । आपकी बात मानकर मैंने यह धोखा खाया ।"

पुजारी को हैरानी हुई, "मेरी बात मानकर? मैं इस में कहां से आ गया?"

"लगता है आपकी याद्दाश्त कुछ कमज़ोर है । मैंने एक दिन आप से चंदन के बारे में राय जाननी चाही थी । मैंने आपको यह भी बताया था कि महेश ने उसके बारे में क्या कहा है । आपने कहा था किं दूसरों की कथनी पर मत जाओ, वरना बरबाद हो जाओगे । मैंने सोचा आपसे बढ़कर यहां प्रतिष्ठित और सुलझा हुआ व्यक्ति और कौन हो सकता है, इसलिए मुझे आपकी बात माननी चाहिए । मुझे विश्वास हो गया था कि महेश झूठ बोल रहा है । लेकिन चंदन को पैसा देकर मैं धोखा खा गया हूं ।" सदानंद ने सारी बात विस्तार से कह सुनायी ।

सदानंद की बात सुनकर पुजारी हंसे बिना न रह सका ।बोला, "मैंने तो केवल बात के लिए बात कही थी । तुम उसका मतलब ठीक से नहीं समझ सके । मैं कहता या महेश कहता, हैं तो ये दूसरों की बातें ही न । ऐसी बातें हमेशा बहकाने वाली होती हैं । ऐसी बातों पर विश्वास करना और किसी नतीजे पर पहुंचना खतरे से खाली नहीं होता । यही सूत्र मैंने तुम्हें दिया था । कोई आदमी कैसा है, यह तुम अपने अनुभव से ही जान सकते हो । तुम्हें निर्णय स्वयं लेना होगा । ऐसी बातों में दूसरों की राय लेना सरासर बेवकूफी ही समझी जायेगी, और कुछ नहीं ।"

पुजारी की बातों में जो गूढ़ अर्थ छिपा हुआ था, वह अब सदानंद की समझ में आ गया था । वह वहां से तो चला आया था, लेकिन पूरे मनोयोग से सोच रहा था कि चंदन जैसे व्यक्ति से कैसे निपटा जाये ।

विभीषण को जब पता चला कि रावण लंकायज्ञ कर रहा है तो उसने राम तथा वानर वीरों को संबोधित करते हुए कहा, "यदि रावण का यह लंकायज्ञ पूरा हो गया तो उसे पराजित कर पाना बहुत कठिन हो जायेगा, क्योंकि यज्ञ-कुंड में से लोह शरीर वाले योद्धा और चतुरंग-सेना एकदम प्रकट होगी । इसलिए यह अनिवार्य है कि इस यज्ञ में विघ्न डाला जाये ।"

विभीषण के इस सुझव को कार्य-रूप देना हर किसी को असंभव-सा लगा । तब जांबवान ने कहा, "अंगद अदृश्यकरणी विद्या जानता है । उसकी सहायता से हम रावण के यज्ञ को नष्ट कर सकते हैं ।"

जांबवान का इशारा पाते ही अंगद अपनी अदृश्यकरणी विद्या के बल पर रावण के अंत:पुर में जा पहुंचा । वह मंदोदरी को उसकी चोटी से पकड़कर उसे घसीटते हुए रावण के यज्ञ-स्थल तक ले आया । मंदोदरी को ऐसी हालत में देखकर भी रावण यज्ञ से नहीं उठा । मंदोदरी अब ज़ोर-ज़ोर से आर्त्तनाद करने लगी और बोली, "तीनों लोकों के विजेता की पत्नी की रक्षा करने वाला क्या कोई नहीं रहा?"

रावण ने जब मंदोदरी का यह आर्तनाद सुना तो वह चुप न रह सका । एकदम से यज्ञ की वेदी से उठ खड़ा हुआ । अंगद तो यही चाहता था । वह जैसे अदृश्य रूप में आया था, वैसे ही वहां से खिसक लिया ।

"देर से ही सही, आप अब भी राम से

ही जायेगा । वह चोर की तरह आकर सीता को नहीं ले जा सकता । यदि मैं मृत्यु को प्राप्त हो गया तो तुम सब अपने साथ-साथ सीता को भी चिता पर घसीट लेना । तब सीता के वियोग में राम अपने आप खत्म हो जायेगा ।" और यह कहकर रावण मतिभ्रष्ट होकर पश्चिम दिशा की ओर चल दिया ।

लंका में जब स्थिति इस प्रकार काबू से बाहर हो रही थी, तब वहां से एक हजार योजन की दूरी पर नीचे पाताल लोक में एक और कहानी घट रही थी ।

पाताल लोक का राजा था मैरावण । उसमें मंत्र-शक्ति अद्भत थी ।

मैरावण नागलोक से वासुकी की बेटी चंद्रसेना को अपने तांत्रिक बल से उठा लाया था और उससे जबरन विवाह करना चाहता था । चंद्रसेना अपूर्व सुंदरी थी । वह मन से राम को अपना पति मान चुकी थी । वह मैरावण से बार-बार कह रही थी कि राम ही उसका पति है । वह सीता स्वयंवर के समय अन्य नाग कन्याओं के साथ वहीं उपस्थित थी । तभी उसने राम को देखा था और तभी से राम उसका आराध्य बन गया था ।

संधि कर लीजिए ।" मंदोदरी ने रावण को फिर सलाह दी ।

पर रावण उससे बोला, "अपने बंधु-बांधवों, अपने छोटे भाई और अपने बेटों को खोकर क्या मैं एक क्षुद्र की तरह राम से संधि कर लूं? तुम क्या सोचती हो कि राम मेरा अंत कर देगा? यदि नौबत यहां तक आ भी पहुंची तो मैं योग के बल पर अपना कपाल-विच्छेद करके स्वयं अपने प्राण त्याग दूंगा । राम ने विभीषण को वचन दिया है कि वह मुझे मार कर उसे सिंहासन पर बिठायेगा । लेकिन उसका यह वचन पूरा नहीं होगा । राम यह भी प्रण किये हुए है कि वह मेरे प्राण लेकर सीता को मुझे से मुक्त करायेगा । उसका यह प्रण भी यों

उधर रावण लंका के पश्चिमी छोर पर पहुंच गया था । वह वहां कुश को बिछाकर प्रायोपवेश की तैयारी कर रहा था । उस समय नारद वहीं से गुज़र रहा था । उसने रावण से कहा, "अरे रे, यह तुम क्या करने

जा रहे हो? क्या तुम अपने को इतना निराश्रित समझ बैठे हो? तुम क्या मैरावण को भूल गये? वह तो तुम्हारा मित्र होने के साथ-साथ तुम्हारे भाई के समान भी है।" बस नारद ने इतना ही कहा और वहां से खिसक लिया।

रावण ने जैसे ही मैरावण का नाम सुना, वैसे ही उसमें एक नये जोश का संचार हुआ। उसने अपनी आंखे मूंदकर उसका स्मरण किया। उस समय मैरावण चंद्रसेना के निकट था और राम की जिस मूर्ति की वह आराधना कर रही थी, उसे उठाकर कह रहा था, "मैं इस राम को यहां लाकर इसे काली माता की भेंट चढ़ाऊंगा।"

"इतना बढ़चढ़कर मत बोलो। तुम राम की शक्ति को नहीं जानते। वहतुम्हें यों ही नष्ट कर डालेगा।" चंद्रसेना कह रही थी।

"क्या तुम समझती हो कि मुझे नष्ट करना इतना आसान है?" मैरावण ने गर्जना की। "इस पाताल लोक के नीचे, एक हजार योजन दूर, एक भयानक गुफा है। वहीं उस गुफा में एक रत्न-पेटिका है जिसमें पांच भौंरों के रूप में मेरे प्राण सुरक्षित हैं। जो कोई मुझे मारना चाहेगा, उसे पेटिका को खोल कर उन पांचों भौंरों को एकसाथ खत्म कर देना होगा, वरना मझे मारना असंभव है। उस भयानक गुफा के द्वार पर अति-भयानक पिशाच पहरा दे रहे हैं। मेरे प्राण हरने वाला तीनों लोकों में कोई है ही नहीं।" और उसने राम की मूर्ति को धरती पर दे पटका जिससे उसके टुकड़े-टुकड़े हो गये।

लेकिन उसी समय उसे अंतर्ज्ञान हुआ कि रावण उसका स्मरण कर रहा है। रावण ने जैसे ही अपनी आंखें खोलीं, वैसे ही मैरावण धरती का सीना चीरकर उसके सामने प्रकट हो गया। फिर दोनों आपस में एक दूसरे के गले लग गये।

रावण ने मैरावण को समूची स्थिति से अवगत कराया और उसे बताया कि राम और लक्ष्मण ने कैसे उसके लिए इतनी विकट स्थिति पैदा कर दी है। उसने यह भी कहा कि राम और लक्ष्मण का अंत हो।

रावण की बात सुनकर मैरावण बोला, "वाह, खूब। जो मैं चाहता हूं, वही तुम भी चाहते हो। मैं कल ही दोनों

राम-लक्ष्मणों को काली मां पर बलि चढ़ाये देता हूं।"

मैरावण के मुंह से ऐसे शब्द सुनकर रावण खुशी से भर गया और फिर उसे अपने मंदिर में ले गया।

गुप्तचरों के ज़रिये विभीषण को रावण की इन तमाम गतिविधियों का पता चल गया था। तब तक रात हो चुकी थी और सब सोने की तैयारी कर रहे थे।

विभीषण वानरों के पास गया और उन्हें उसने मैरावण के बारे में बताया। फिर बोला, "मैरावण राम और लक्ष्मण का अपहरण करना चाहता है। हमें एकदम पूरी तरह सावधान रहना होगा। इसके लिए हमें पहरा भी देना होगा।" और इस तरह वानरों को चेताकर विभीषण वहां से चला गया।

विभीषण जब वहां से चला गया तो हनुमान ने अपनी पूंछ बढ़ानी शुरू कर दी और उसे इतना बढ़ाया कि वह राम और लक्ष्मण के चारों ओर किले की तरह खड़ी हो गयी। हनुमान स्वयं उस किले पर चढ़कर बैठ गया। वह अब इतना सजग था कि एक चींटी तक भी प्रवेश नहीं कर पाये।

थोड़ी देर बाद 'विभीषण' फिर वहां आया और हनुमान की भक्तिभावना की गदगद हो सराहना करने लगा। फिर उसने हनुमान से कहा कि वह राम और लक्ष्मण के हाथों पर रक्षा-बंधन बांधना चाहता है। इस पर हनुमान ने पूंछ को थोड़ा सा हटाया और बिभीषण के प्रवेश के लिए जगह बना दी।

विभीषण जब रक्षाबंधन बांधकर उस पूंछ-रूपी किले से बाहर आया तो उसने फिर हनुमान को सावधान करते हुए कहा, "वह धोखेबाज मैरावण मेरे या हम में से किसी एक के रूप में यहां आ सकता है। इसलिए तुम्हें अत्यधिक सावधानी बरतनी होगी।" और यह कहकर वह लौट गया।

अभी थोड़ी ही देर हुई थी कि विभीषण फिर वहां आ गया। हनुमान ने तुरंत उसे गर्दन से पकड़ लिया और अपनी गदा से उसे यह कहते हुए मारने को हुआ, "मैरावण, मैं तुम्हारा छल अच्छी तरह समझता हूं। वह यहां नहीं चल पायेगा।"

अब विभीषण एकदम तड़पकर बोला, "अरे गज़ब हो गया। लगता है मैरावण

मेरे ही वेश में यहां आया था । कहीं उसने राम और लक्ष्मण का अपहराण तो नहीं कर लिया? अरे, अच्छी तरह देखो ।"

तब हनुमान ने अपनी पूंछ के किले के भीतर झांककर देखा और पाया कि वाकई वहां राम और लक्ष्मण नहीं थे । यह सब देखकर हनुमान बुरी तरह हताश हो गया और धम्म से भूमि पर बैठ गया । तब जांबवान ने कहा, "उठो, उठो । यह समय हताश होने का नहीं है । हम सब में अकेले तुम ही हो जो राम और लक्ष्मण की रक्षा कर सकते हो ।"

तब तक हनुमान ने विभीषण से यह जान लिया था कि पाताल-लोक में कैसे पहुंचना है । फिर उसने अपना शरीर बढ़ाया और आकाश में उड़ गया ।

उधर विभीषण रूपी मैरावण ने राम और लक्ष्मण को दो नन्हीं प्रतिमाओं में परिवर्तित कर दिया था और उन्हें अपने वस्त्रों में छिपाकर और हनुमान को विभीषण की तरह चेताकर पाताल-लोक में लौट आया था ।

पाताल लोक में लौटकर उसने चंद्रसेना को बुलवाया और उसे बदी राम और लक्ष्मण को दिखाते हुए बोला, "यह रहा तुम्हारा राम, और यह है उसका छोटा भाई लक्ष्मण । मैं कल सुबह ही इन दोनों को काली माता पर बलि चढ़ा दूंगा और फिर तुमसे विवाह भी कर लूंगा।"

हनुमान ने पश्चिमी छोर से ही सागर में प्रवेश किया । वहां उसे कमल की कली के आकार का आग की तरह दहकता एक पर्वत दिखाई दिया । वह उस पर्वत के शिखर पर जा पहुंचा । शिखर पर उसे एक छोटा-सा बिल दिखाई दिया । वह तुरंत सूक्ष्म रूप में आ गया और उस बिल से नीचे उतरता गया । वह बिल उसे पाताल लोक के सिंहद्वार तक ले गया ।

सिंहद्वार पर एक महाबलशाली योद्धा पहरा दे रहा था । वह बड़ा पराक्रमी दिखता था । हनुमान को उसके प्रति बड़ा अपनापन लगा । वह उसे बड़े स्नेह से देखने लगा ।

हनुमान सूक्ष्म रूप में था । फिर भी उस योद्धा द्वारापाल ने उसे देख लिया और उससे पूछने लगा, "कौन हो तुम? मुझे ऐसे धोखा देकर तुम भीतर नहीं जा सकते । भीतर

जाना ही चाहते हो तो पहले मेरे हाथों से मृत्यु का स्वाद चख लो ।" फिर उसने अपनी मुट्ठी कस ली और हनुमान से लड़ने पर उतारू हो गया ।

उस द्वारपाल के पराक्रम पर हनुमान वाकई आश्चर्य-चकित था । न जाने यह कौन है, अपने मन-ही मन सोचा, लेकिन मेरे मुकाबले पर ही लड़ रहा है । इसे थोडी देर तक तो चकमा देना ही चाहिए, फिर इसका अंत करूंगा । और इस तरह सोचते हुए वह वहीं थका-मांदा सा दिखता हुआ बैठ गया ।

द्वारपाल को लगा कि उसका प्रतिद्वंद्वी थककर टूट गया है । इस पर वह जोश में आ गया और ज़ोर-ज़ोर से हंसते हुए बोला, "हे मायावी, मुझे तुमने क्या समझा था जो मुझसे भिड़ने चले आये? मैं मत्स्यवल्लभ हूं । महावीर हनुमान मेरे पिता हैं । क्या तुम यह तथ्य जानते हो?"

जब वह योद्धा द्वारपाल इस प्रकार बोला, तब हनुमान को आश्चर्य तो हुआ ही, साथ ही उसे गुस्सा भी आया । उसने अपने दांत पीसते हुए कहा, "अरे, मत्स्यवल्लभ, तुम यह क्या कह रहे हो । सारी दुनिया जानती है कि हनुमान आजन्म ब्रह्मचारी रहा है । फिर वह तुम्हारा पिता कैसे हो सकता है? ऐसा झूठ बोलने वाले को मृत्युदंड ही मिलना चाहिए ।" और यह कहते हुए हनुमान उसकी ओर, उस पर वार करने के लिए बढ़ा । वह अपने दोनों हाथों को जोड़कर उस पर वार करने ही जा रहा था कि पीछे से किसी की चीख सुनाई दी । "स्वामी ! आप यह क्या करने जा रहे हैं? रुकिए, और अपने क्रोध पर काबू रखिए ।"

हनुमान ने झट घूमकर पीछे की ओर देखा । तभी बिजली की कौंध के समान चमकती हुई एक अद्‌भुत सुंदरी उसे अपनी ओर दौड़ती आती हुई दिखाई दी । हनुमान वहीं रुक गया । अब तो उसका आश्चर्य और भी बढ़ गया था ।

सुंदरी ने हनुमान के पैरों पर झुककर उसे प्रणाम किया और साथ ही बोली, "इस बालक ने जो कहा, सच ही है । मेरा नाम सुवर्चला है । दक्षिण सागर मेरा पिता है । असंख्य जलचरों की मैं रानी हूं । मैं आपको

जानती हूं, लेकिन आप मुझे नहीं जानते। एक बार जब आप सागर पार कर रहे थे, तब सिंहिका की परछाई नीचे खींचने लगी थी। आपका उससे युद्ध हुआ। उस समय मैं मत्स्य-रूप में सागर पर तैर रही थी। आपने सिंहिका का वध कर दिया और अपने पसीने की बूंदें आपने अपनी उंगली से पोंछकर एक तरफ छिड़क दीं। कुछ बूंदें मेरे मुंह में आ गिरीं। मैंने उन्हें निगल लिया जिससे मैं गर्भवती हो गयी। यह मत्स्यवल्लभ मेरे उसी गर्भ की निशानी है। इसलिए यह आपका ही पुत्र है।"

सुवर्चला ने जैसे ही अपनी बात खत्म की, वैसे ही हनुमान को एक दिव्यवाणी सुनाई पड़ी, "हनुमान, सुवर्चला ने जो कहा है, वह पूरी तरह सत्य है। मत्स्यवल्लभ तुम्हारा पुत्र है।"

हनुमान अब एकदम स्तंभित खड़ा था। वह कुछ बोल न पा रहा था। तब सुवर्चला ही बोली, "मत्स्यवल्लभ बचपन से ही काफी धैर्यवान रहा है। यह अद्भुत साहसी भी है। लेकिन मैरावण ने इसके साहस और पराक्रम पर अंकुश लगाना चाहा। वह इसे उठाकर यहां ले आया और इसे अपना दास बना लिया। दिव्यवाणी के अनुसार इसे दासता से मुक्ति तभी मिल सकती थी जब इसे आपके दर्शन होते। अब इसे आपके दर्शन प्राप्त हो गये हैं, इसलिए अब यह इसी क्षण से दासता से मुक्त हो गया है।"

सुवर्चला ने जैसे ही अपनी बात पूरी की, दिव्यवाणी ने फिर उसकी पुष्टि की और हनुमान को विश्वास दिलाया कि मत्स्यवल्लभ उसी का पुत्र है।

अब मत्स्यवल्लभ ने झुककर हनुमान को प्रणाम किया और हनुमान ने उसे स्नेह से उठाकर अपने सीने से लगा लिया।

सुवर्चला बहुत खुश थी। वह हनुमान से बोली "आप सीधे चंद्रसेना के पास जाइए। केवल वही मैरावण के प्राणों का रहस्य जानती है। उससे आपको हर प्रकार की सहायता मिलेगी।" और इसके साथ ही वह हनुमान को प्रणाम करके अपने पुत्र के साथ वहां से प्रस्थान कर गयी।

शैतान से तौबा

पुराने वक्तों की बात है। बगदाद में अब्दुल्ला नाम का एक अमीर रहता था जिसका सबसे पसंदीदा काम शैतानों की कहानियां सुनना था।

वह अक्सर शहर में ऐलान करवाता रहता कि शैतान की कहानियां सुनाने वालों को बड़े-बड़े इनाम दिये जायेंगे। इनाम का लालच कई लोगों को उसकी तरफ खींचता, वह कहानी सुनाने वाले को बीच में ही रोककर कोई बेहतर कहानी सुनाने के लिए ज़िद करता, और अगर कोई उससे ऊबकर कहानी सुनाये बिना ही वहां से खिसकने की कोशिश करता तो अब्दुल्ला उस व्यक्ति को कोड़े मार-मारकर बेहाल कर देता।

एक दिन एक दुबला-पतला आदमी उसके पास आया। वह फटेहाल था। अब्दुल्ला उस वक्त दोपहर का खाना खाकर और अपनी नींद लेकर आराम से बैठा हुआ था। वह आदमी जब उसके निकट पहुंचा, तो उसे उससे मिट्टी की बू आयी।

अब्दुल्ला ने उससे पूछा, "तुम कौन हो? क्या तुम शैतान की कहानियां सुना पाओगे?"

"मेरा नाम हमीद है, हुज़ूर। शैतान की कहानियां सुनाने में मेरा कोई सानी नहीं। हुक्म दें, कहानी शुरू करूं।" हमीद ने कहा।

"हां, सुनाओ, लेकिन एक बात याद रखना। अगर तुम्हारी कहानी मुझे पसंद आयी तो तुम्हारी यह फटेहाली एकदम दूर हो जायेगी," अब्दुल्ला ने कहा।

"ठीक है, हुज़ूर, तो सुनिए यह कहानी। ठीक आपकी तरह मेरी बीवी को भी शैतानों की कहानियां सुनने की आदत थी। लेकिन वह बड़ी डरपोक थी। अंधेरे से वह बहुत डरती थी। आधी रात के वक्त एक बार

अरबी लोककथा

उसने मुझसे कहा कि मैं उसे भूतों की कहानी सुनाऊं। दूर से लोमड़ियों की हू-हू की आवाज़ें आ रही थीं। मैंने उसे कहानी सुनाने से मना किया। लेकिन वह अपनी बात पर अड़ी रही। मजबूर होकर मैंने उसे एक बहुत ही खौफनाक शैतान की कहानी सुनानी शुरू कर दी। कहानी सुनकर मेरी बीवी इतना डरी, इतना डरी कि कलेजा फट कर उसी वक्त उसकी मौत हो गयी।"

"यह भी कोई कहानी है?" अब्दुल्ला एकदम गुस्से में आ गया।

"रुकिए, हूजूर। असली कहानी तो अब शुरू होगी। सुबह ही मैं अपनी बीवी को दफनाकर घर लौटा। अचानक मेरे सामने रोशनी की चमक हुई। मेरे सामने मेरी पत्नी आ खड़ी हुई। वह प्रेतनी बन गयी थी। उसने मुझसे कहा-आपके लाख मना करने पर भी मैं नहीं मानी और हठ पकड़कर मैंने आपसे शैतान की कहानी सुनी। इसका खमियाज़ा मैं अब भुगत रही हूं। मैं आपसे दूर हो गयी हूं। मुझे माफ कर दीजिए। हमीद कहे जा रहा था।

अब्दुल्ला ने उसे एकाएक टोका और कहा, "इसमें अजीब बात क्या है?"

"प्रेतनी मुझे दिन के वक्त दिखाई दी। यह अजीब बात नहीं?" हमीद ने पूछा।

अब्दुल्ला दाढ़ी संवारने लगा और बोला, "अजीब बात है, पर मैं यकीन नहीं करता कि शैतान दिन के वक्त दिखाई देगा।"

"दिन के वक्त दिखाई क्यों नहीं देगा शैतान?" हमीद ने कहा। "क्या मैं दिन के इस वक्त यहां नहीं हूं? एक महीना पहले मैं आपके पास कहानी सुनाने आया था और आपसे बुरी तरह पिटकर यहां से वापस गया था। एक हफ्ते तक मैं खटिया पकड़े रहा और फिर मर गया। अब शैतान बनकर यहां आया हूं।" और इसके साथ ही शैतान हमीद ने अपना सर धड़ से अलग करके हवा में गेंद की तरह उछाल दिया।

अब्दुल्ला मारे डर के चीख उठा और आइंदा के लिए उसने शैतानों के बारे में कहानियां सुनने से तौबा कर ली।

अनूठा धन

पार्वती का एक ही पुत्र था। उसका नाम शिवकुमार था। पति के गुज़र जाने के बाद शिवकुमार ही उसके लिए सब कुछ था। उसका वह पूरी लगन से पालन-पोषण कर रही थी।

शिवकुमार जब बड़ा हुआ तो पार्वती ने अपने नज़दीकी रिश्ते की एक लड़की, सुजाता, को अपनी बहू बनाना चाहा। लेकिन उसी गांव में पद्मा नाम की एक दूसरी लड़की थी जिसे शिवकुमार बहुत चाहता था। एक दिन उससे सीधे मिलने पार्वती चल दी।

पद्मा रईस लड़की थी। वह सुकुमारी थी। पार्वती ने कहा, "हम तो तुम्हारी तरह रईस नहीं हैं। लेकिन मेरा बेटा बहुत सीधा है। मैं जानती हूं तुमने उसे अपने जाल में क्यों फांसा है। तुम चाहोगी कि जो तुम कहो, वह वही करे।"

"ऐसी बात नहीं, मां जी। हम दोनों ने एक दूसरे को अच्छी तरह समझ-परख लिया है। आप आशीर्वाद दें तो हमारी यह शादी भी हो जाये," पद्मा ने कहा।

"अच्छा सुनो। तुम अपने मायके से एक पैसा भी नहीं लाओगी। मेरे घर में आकर तुम्हें अकेली को हर काम करना होगा। क्या तुम इसके लिए तैयार हो?" पार्वती ने पद्मा से प्रश्न किया।

पद्मा ने स्वीकृति में अपना सर हिला दिया। पार्वती ने घर पहुंचते ही बेटे को बुलाया और उससे कहा, "तुम अगर सुजाता को ठुकरा कर पद्मा से शादी करोगे तो इसमें हमारी बदनामी होगी। लोग कहेंगे कि हमने पैसे के लोभ में पद्मा का रिश्ता मंजूर किया।"

शिवकुमार बोला, "ऐसी बात है तो मैं किसी गरीब घर की लड़की से शादी कर लूंगा,

लेकिन सुजाता से नहीं करूंगा ।"

पार्वती तब बोली, "तब तुम पद्मा से ही शादी कर लो । लेकिन शादी के बाद उसे अपने मायके से किसी प्रकार की कोई मदद नहीं मिलनी चाहिए ।"

शिवकुमार ने अपनी सहमति में सर हिला दिया और शादी हो गयी । पद्मा अब उनके घर की बहू बनकर आ गयी थी । पार्वती ने अपने बेटे के सामने ही अपनी सारी शर्तें पद्मा को एक बार फिर खोल कर बता दीं ।

पद्मा ने फिर कहा, "मां जी, आप जो कुछ भी करने को कहेंगी, मैं करूंगी । बेशक, मैं एक अमीर घर की बेटी हूं, फिर भी मैं हरेक काम अच्छी तरह करना जानती हूं । हां, अगर कोई मुझ पर बराबर आंख रखे रहेगा तो मैं कोई छोटा-सा काम भी नहीं कर पाऊंगी । इसलिए मैं जो भी काम करूंगी, दरवाज़ा बंद करके करूंगी । अगर मैं आपके पांव दबाऊंगी तो वह भी रात के समय । तब कमरे की बत्ती बुझा देनी होगी ।" पद्मा की बात पर पार्वती कुछ कहना चाहती थी, लेकिन शिवकुमार ने उसे टोक दिया और पार्वती कुछ बोल न सकी ।

पद्मा कैसे काम करती थी, इसका तो किसी को पता न चला, लेकिन उसके इस घर में आ जाने के बाद बरतन हमेशा साफ-सुथरे और चमचमाते हुए दिखते । घर की दूसरी चीजें भी करीने से रखी दिखती और खाना इतना स्वादिष्ट होता कि रोज़ घर में दावत का समां बंधा रहता । रात के वक्त पद्मा सास के पांव भी दबाती ।

इसी तरह कुछ समय बीत गया । एक दिन पार्वती के यहां सुजाता का पिता आया और पार्वती से बोला, "सुजाता के लिए भी वर मिल गया है ।"

पार्वती को यह खबर अच्छी लगी । उसने पूछा कि वर कैसा है । इस पर सुजाता का पिता बोला, "जब हमारे नजदीकी रिश्तेदार ही पैसे के लालच में पड़कर हमें ठुकरा देंगे तो हमें बढ़िया रिश्ता कैसे मिलेगा । फिर भी वर अच्छा ही है ।"

सुजाता के पिता की बात सुनकर पार्वती के मन को थोड़ा दुख हुआ । उसने उसे बताया कि उसने अपनी बहू पर कैसी-कैसी शर्तें लगायी थीं ।

पार्वती की बात सुनकर सुजाता के पिता ने कहा, "मैं अगर कुछ कहूं तो मुझ पर गुस्सा न करना । आपका घर देखते ही पता चल जाता है कि आपकी बहू घर के काम नौकर-नौकरानियों से करवा रही है ।"

सुजाता के पिता की बात सुनकर पार्वती सन्न रह गयी । दूसरे दिन उसने छिपकर देखा । असलियत अब उसके सामने थी । पद्मा इधर से सारे दरवाजे बंद कर देती, लेकिन पिछवाड़े के दरवाजे खोलकर नौकरों को घर के भीतर कर लेती । उनमें से एक बरतन मांजता, एक कपड़े धोता, एक घर में झांडू लगाता और एक खाना बनाता । जब वे सब काम कर रहे होते तो पद्मा आराम से बैठकर चित्रकारी करने में तल्लीन रहती ।

इतना बड़ा धोखा । पार्वती अब चुप न रह सकी । शाम के समय जब उसका बेटा घर आया तो उसने उसी समय बहू को बुलाया और अपनी आंखों से जो कुछ देखा था, उसके बारे में सफाई मांगी ।

पर पद्मा इससे ज़रा भी विचलित नहीं हुई । कहने लगी, "मां जी, आप क्या चाहती हैं । मैं ही सब काम करूं? दूसरों से काम करवाना क्या आपको ज़रा भी पसंद नहीं? आज तक तो आपने हर काम की तारीफ ही की थी । अब क्या हो गया?"

"इतने नौकर-चाकरों से तुम काम ले रही हो । इन्हें तनख्वाह कौन देता है?" पार्वती ने प्रश्न किया । "मैंने कहा था ना, तुम्हारे मायके से यहां एक पैसा भी नहीं आयेगा । तब यह क्या है?"

पद्मा ने उसी तरह पलट कर उत्तर दिया, "मैं एक पैसा भी मायके से नहीं लायी और न ही वहां से मंगवाया है । मैं जो चित्र तैयार कर रही हूं, इन्हें आपका बेटा शहर में बेचकर काफी पैसा ले आता है ।"

"हम हर रोज़ जो दावतें उड़ा रहे हैं, क्या उनके लिए भी चित्रों से पैसा प्राप्त हो जाता है?" पार्वती के स्वर में कर्कशता आ गयी थी ।

शिवकुमार को अब दखल देना ही पड़ा । कहने लगा, "मां, घर में जब खाना पकाने के लिए नौकरानी है, हम क्यों न अच्छे से अच्छा खाना खायें? यह सब प्रबंध मैंने ही

किया है । मैं पहले से कहीं ज़्यादा मेहनत कर रहा हूं और खूब कमाई करता हूं । मेरा ध्येय बस एक ही है कि मेरी मां और मेरी पत्नी ज्यादा से ज़्यादा सुख-सुविधा से रहें ।''

सुजाता का पिता भी वहीं मौजूद था । बोला, ''हां, हां । मेरी बेटी तो इस तरह की कमाई कर नहीं सकती थी । न वह चित्र बना सकती थी, और न वह पति से ज़्यादा मेहनत करवा सकती थी । है न? पार्वती, मुझे तो यही कहना पड़ेगा कि तुम पैसे के लिए ही इस लड़की को बहू बनाकर लायी हो । है तुम्हारे पास इसका कोई जवाब?''

अब पार्वती सुजाता के पिता पर बुरी तरह से झपटी और बोली, ''मेरी शर्त बस, यही थी कि मेरी यह बहू अपने मायके से एक पैसा भी नहीं लायेगी । लेकिन वह तो स्वयं धन है । मैं उसे कैसे ठुकरा सकती हूं । वह खुद कमाती है और अपने पति को भी ज़्यादा कमाने के लिए प्रेरित करती है । तब मैं कैसा एतराज़ कर सकती हूं । मैं तो इसे अहोभाग्य कहूंगी । हम अपनी मेहनत की कमाई से इस घर को चला रहे हैं । तुम भी सुजाता को इस योग्य बनाओ कि वह अपने बलबूते पर खड़ी हो सके और अपने ससुराल को खुशहाल बना सके ।''

सुजाता के पिता की बोलती अब बंद हो गयी थी । वह वहां से देखते-ही-देखते नौ-दो ग्यारह हो गया । पद्मा और शिवकुमार तुरंत पार्वती के पांवों पर झुके और उससे माफी मांगने लगे ।

तब पार्वती ने कहा, ''मेरी बहू जब चित्र बनाकर पैसा कमा सकती है तो मैं उसे घर का काम करने को क्यों मजबूर करूं? पहले ही अगर मुझे पता चल गया होता तो क्यों घर में नौकर इस तरह छिपकर आते और क्यों उन्हें ज्यादा पैसा दिया जाता । मैं तो कहूंगी तुम्हारे जैसे बहू-बेटे बड़े सौभाग्य से किसी को मिलसे हैं ।'' और यह कहकर उसने उन दोनों को प्यार से अपने गले लगा लिया ।

चंदामामा की खबरें

तिरछी मीनार

आज के संसार में इटली की तिरछी पीसा मीनार लाखों पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बनी हुई है । यह एक तरफ कुछ झुकी हुई सी दिखती है । कुछ लोगों का कहना है कि इसे ऐसा ही बनाया गया था ताकि लोग इस अज्ञात व्यावसायिक नगर में आते रहें । लेकिन वे सब गलत साबित हुए हैं । मीनार के पास हाल ही में की गयी खुदाई से पता चला है कि उस समय वहां एक बहुत बड़ी खाई थी जिसे भरने में लगभग दस वर्ष लगे । मीनार के निर्माण का काम सन् ११७३ में शुरू हुआ । इस में तब से झुकाव आना शुरू हुआ जबसे खाई की मिट्टी धंसनी शुरू हुई । यह झुकाव हर वर्ष बढ़ता ही जा रहा है । कभी-कभी यह एक सेंटीमीटर तक होता है ।

पांच वर्ष की आयु में भूगोल का ज्ञान

५ वर्षीय श्रीविद्या मद्रास के एक नर्सरी स्कूल में पहले दर्जे में पढ़ती है । भूगोल उसका विषय नहीं है, फिर भी उसे स्थानों, राजधानियों और संसार के बड़े नगरों पहाड़ों, नदियों, झीलों, समुद्रों और रेगिस्तानों के बारे में गज़ब की जानकारी है । तुम कोई भी अटलस खोलो और उससे कोई भी जगह के बारे में पूछो, वह ठीक-ठीक उसी जगह पर अपनी उंगली रख देगी । या उससे कोई प्रश्न ही पूछो, और वह तुरंत अपनी स्मृति से उसका उत्तर देगी । अगर हम उससे पूछें कि जिंबाबवे की राजधानी क्या है, तो वह झट से कहेगी "हरारे" । हाल ही में उसे अमरीका की नेशनल ज्योग्राफिक सोसायटी का कनिष्ठ सदस्य बनाया गया । एटलसों और मानचित्रों में उसकी रुचि तब जगी, जब वह केवल दो वर्ष की थी । उस समय वह अपने चाचा की गोद में बैठी थी और चाचा अपने स्कूल की एटलस में कुछ खोज रहा था ।

गोलकीपर जब फरिश्ता बना

२८-वर्षीय गोलकीपर पॉल एडमांडस को यह तो याद नहीं होगा कि उसने खेल के मैदान में कितनी बार गोल बचाये, लेकिन । अगस्त को फुटबाल के इस खिलाड़ी ने जिस तरह के गोल को बचाया, वह उसकी याद्दाश्त में हमेशा ताज़ा रहेगा । यह घटना तब घटी जब वह एक बाजी खेलकर घर लौट रहा था । तब उसने देख कि ऊपर, ४० फुट की ऊंचाई से एक खिड़की से एक दो साल की बच्ची लटक रही है । उसने तुरंत दौड़ लगायी और अपनी मज़बूत भुजाओं में गिरते ही लपक लिया । "हमारे लिए तो यह फरिश्ता साबित हुआ" इंगलैंड के स्टीवनेज में रहने वाली नन्हीं बच्ची, केली, की मां केरन ग्रांट ने कहा ।

गधे का ज्योतिष

सरयू नदी के किनारे एक गांव में एक ज्योतिषी रहता था । दूर-दूर तक उसकी टक्कर का ज्योतिषी नहीं था । इसीलिए उसे बहुत ख्याति मिली ।

धीरे-धीरे ज्योतिषी की ख्याति राजधानी तक भी पहुंची । आखिर, उसे राजधानी से बुलावा भी आ गया, और फिर कुछ ही दिनों में उसे राजाश्रय भी मिल गया ।

अब इस ज्योतिषी का प्रभुत्व चारों ओर छा गया था जिससे उसे कई प्रकार के अनुदान प्राप्त हुए । रुपये-पैसे की तो उसके पास कोई कमी रही न थी । अब वह सैकड़ों एकड़ भूमि का स्वामी भी हो गया था । यह भूमि उसके गांव में ही नदी के किनारे थी ।

फसल के समय ज्योतिषी अपने गांव में चला आया जहां उसने अपनी फसल कटवायी, उसके ढेर लगवाये, उसकी मड़ाई-ओसाई करवायी और धान को खलिहानों में भरवा दिया । उसके बाद वह अपने घर में आ गया ।

उस दिन दोपहर का भोजन करके ज्योतिषी थोड़ी देर के लिए सो गया । जब वह जगा तो ठंडी हवा पाने के लिए वह घर से बाहर अपने चबूतरे पर आ बैठा । उस समय गांव का धोबी घाट पर कपड़े धोकर और उन्हें गधे पर लादकर घर लौट रहा था । जब उसकी नज़र ज्योतिषी पर पड़ी तो वह वहीं गया और उससे बोला, "मालिक, लगता है आपका सारा धान खलिहानों में ही है । आप जल्दी उसे घर ले आइए । देर मत कीजिए ।"

"ले आऊंगा । ऐसी भी क्या जल्दी है?" ज्योतिषी ने कहा ।

"यह आप क्या कह रहे हैं, हुजूर । अभी थोड़ी देर में आंधी-पानी आने वाला है । आपको जल्दी नहीं?" धोबी ने कहा ।

२५ वर्ष पूर्व चंदामामा में प्रकाशित कहानी

धोबी की बात पर ज्योतिषी हंस दिया और कहने लगा, "अरे, तुम भी ज्योतिष जानने लगे? इस मौसम में बारिश कहां से आयेगी? फिर आंधी का तो सवाल ही नहीं उठता। ज़रा उस तहफ आकाश में देखो। कितना साफ है। बादल का कहीं नामोनिशान तक नहीं। इस तरह अज्ञान की बातों करना, और वह भी मेरे सामने, तुम्हें शोभा नहीं देता।"

"हुज़ूर, मैं आपकी भलाई के लिए ही कह रहा. हूं। मौसम-वौसम या फलित-ज्योतिष के बारे में मैं कुछ नहीं जानता, लेकिन यह जानता हूं कि अभी कुछ ही घंटों में तूफान आयेगा। इसलिए आप अपनी गाड़ियां भिजवाकर खोतों से सारा धान उठवा लें।" और इन शब्दों के साथ धोबी अपने गधे को हांकता हुआ आगे बढ़ा।

ज्योतिषी को धोबी की अबोधता पर हंसी आयी। वह चुपचाप वहीं का वहीं बैठा रहा। एक घंटा ऐसे ही बीत गया। फिर उसने एक बार आकाश की ओर देखा। पश्चिम में उसे छिगुनी के समान बादल का एक छोटा-सा टुकड़ा दिखाई दिया। उसके कुछ ही देर बाद जंगली हाथियों के झुंड की तरह बादल उमड़-घुमड़ कर आने लगे, और चारों तरफ अंधकार छाने लगा। सूरज कहां था, कुछ पता ही नहीं चला था। ऐसे लगा जैसे समूचा संसार अंधकार से ढक गया है। फिर तूफानी हवा बहने लगी और उसके साथ ही आकाश में बिजली गड़गड़ाने लगी।

ज्योतिषी को कुछ नहीं सूझा। वह लाचार था। कुछ कर नहीं सकता था। जिस समय धोबी ने उसे आगाह किया था, उसी समय

यदि उसने कुछ किया होता तो धान बच सकता था। धोबी ने जो कहा था, वह शास्त्र सम्मत नहीं था। इसलिए ज्योतिषी ने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया था। लेकिन अब वह आश्चर्यचकित था। वह समझ नहीं पा रहा थ कि आखिर धोबी को इस तूफान के बारे में कैसे पता चला। क्या वह भी किसी प्रकार का ज्योतिष जानता है? कई तरह के विचार उसके मन में आ रहे थे।

खैर, तूफान आया और चला गया। अब जैसे ही बारिश रुकी, ज्योतिषी अपने घर से बाहर निकला और सीधा धोबी के घर जा पहुंचा। वहां पहुंचकर उसने धोबी से कहा, "अरे भाई, तुम्हारी बात तो सच हो गयी। मैं मान गया तुम्हें। लगता है तुम्हें भी ज्योतिष आता है, वरना तुम इस तरह की भविष्य वाणी कैसे कर सकते थे। मुझे अपने इस ज्योतिष-शास्त्र के बारे में कुछ बताओ। तुमने यह कहां सीखा?"

ज्योतिषी की बात पर अब धोबी के हंसने की बारी थी। उसने कहा, "मेरे इस ज्योतिष में मेरा गुरु मेरा यह गधा है, महोदय। मेरा यह गधा ऐसा बढ़िया भविष्य-फल बताता है कि उसके सामने महान से महान ज्योतिष-ग्रंथ भी फीके पड़ जायें। जब बारिश आने में कुछ घटे होते तो हस गधे के शरीर के रोयें खड़े हो जाते हैं। इसके कान भी खड़े हो जाते हैं, और आंखें ऊपर की ओर उठ जाती हैं। यह बारिश के इंतज़ार में आकाश की ओर एकटक देखे जाता है। फिर यह दबाकर इधर-उधर फुदकते हुए शोर मचाने लगता है। यही है मेरे गधे का ज्योतिष जो अचूक होता है।"

ज्योतिषी धोबी के यहां से अब लौट रहा था। लौटते समय उससे बोला, "चलो, अब जो हुआ सो हुआ। तुम आज की इस घटना के बारे में किसी से कुछ मत कहना, वरना मेरी इज़्ज़त मिट्टी में मिल जायेगी।"

फिर भी इस घटना के बारे में लोगों को पता चल ही गया। इससे उसकी ख्याति पर भी असर पड़ा, और धीरे-धीरे उसे अपने हाथ से सब कुछ फिसलता हुआ लगने लगा।

प्रकृति रूप अनेक
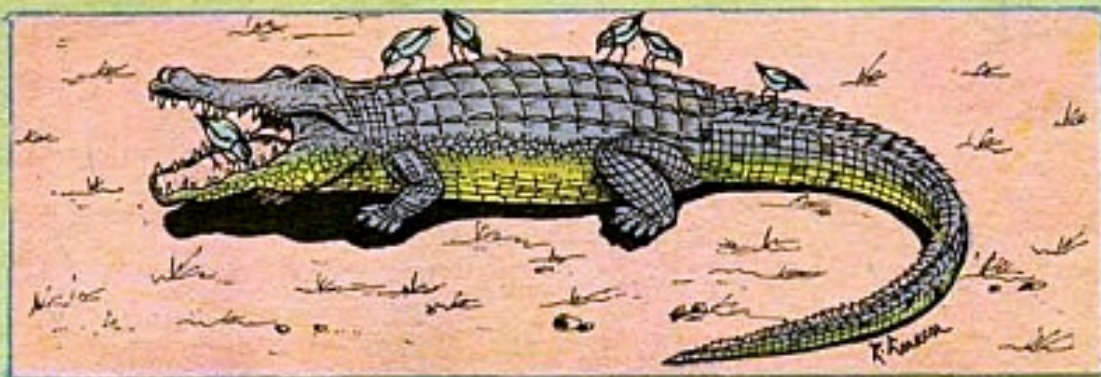
जब मगरमच्छ किसी को कुछ नहीं कहता

जिस समय मगरमच्छ धूप तप रहा होता है, उस समय वह आम तौर पर किसी को कुछ नहीं कहता। पक्षी उस समय उसके सर पर बैठकर बड़े आराम से कीड़े-मकौड़े और जोंके चुनते रहते हैं। वे उसके मुंह के भीतर जाने से भी नहीं घबराते, जब यह विशाल जीव पानी के भीतर लौट जाता है तब मछली, मेंढक और कीड़े-मकौड़े, जो भी उसके सामने आयें, उसके पेट का भोजन बन जाते हैं। जब दूसरे जानवर अपनी प्यास बुझाने पानी के निकट आते हैं, वह उन्हें पानी में घसीट लेता है और उन्हें निगलने से पहले उनके टुकड़े-टुकड़े कर डालता है। यह अपने दांतों से चबा नहीं सकता।

पीछे की ओर उड़ान

ग्वाटेमाला के राष्ट्रीय पक्षी को "क्वेटजाल" कहते हैं। नर-पक्षी संसार के सुंदरतम प्राणियों में से एक है। इसके शरीर की लंबाई लगभग ३५ सेंटीमीटर होती है और पूंछ इससे दुगुनी। इस पक्षी की विशिष्टता यह है कि जहां यह बैठा होता है, वहां से यह पीछे की ओर उड़ान भरता है। इसका कारण यह है कि यह अपनी पूंछ को पेड़ की किसी शाखा से टकराने से बचाना चाहता है। मादा पक्षी पेड़ के तनों के बिलों में अंडे देती है। नर पक्षी उन अंडों पर बैठकर उन्हें सेता है। इसकी पूंछ अपनी लंबाई के कारण नीचे ही लटकती रहती है।

ये भी चिराग हैं

रोशनी देने वाले प्राणियों में जुगनूं आम देखने को मिलता है। जुगनूं भी कई तरह के होते हैं जो अपने साथी को आकर्षित करने के लिए रोशनी फेंकते हैं। इसी प्रकार एक मछली है जिसकी आंख से रोशनी आती है। दरअसल, यह रोशनी आंख के नीचे रहने वाले जीवाणुओं से आती है। इस मछली की खाल में एक खास तरह की तह रहती है जिसकी मदद से मछली उस रोशनी को जला-बुझा सकती है। ब्राज़ील के आदिवासी अपना रास्ता देखने के लिए एक खास तरह के कुकुरमुत्ते का इस्तेमाल करते है। इस के निचले हिस्से में रोशनी रहती है।

*"अब अच्छें बच्चे बनकर <u>फ्लौपी</u>,
तुम नहानें के लिए आजाओ ।"*

आपका बच्चा और फ्लौपी
आप उनको कभी अलग नहीं कर सकते ।

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां फरवरी, १९९३ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी ।

V. Muthuraman

Subhash G. Shenoy

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियां एक शब्द या छोटे वाक्य में हों । ★ १० दिसम्बर'९२ तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए । ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००-/ का पुरस्कार दिया जाएगा । ★ दोनों परिचयोक्तियां केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें : **चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.**

अक्तूबर १९९२ की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **श्रम ही है जीवन का सार!**

दूसरा फोटो : **मेहनत से चलता संसार!!**

प्रेषिका : श्रीमती रेखा मित्तल, बी-९७८, महानगर, लखनऊ (उ.प्र.)

पुरस्कार की राशि रु. १००/- इस महीने के अंत में भेजी जाएगी ।

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

चन्दा भेजने का पता :

डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी,
मद्रास-६०० ०२६.

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.